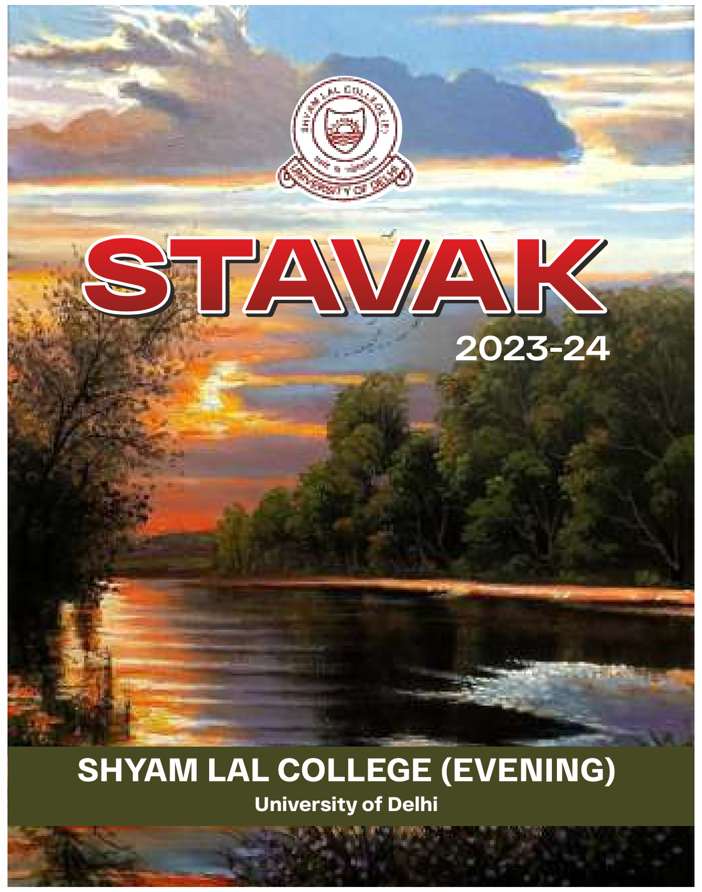

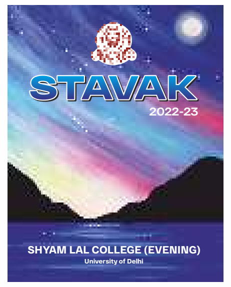

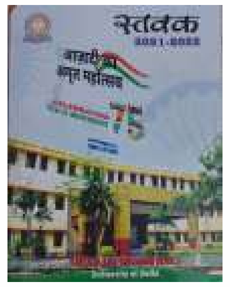

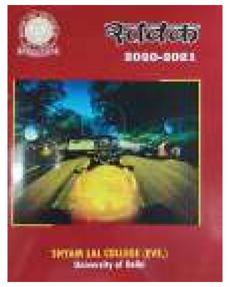

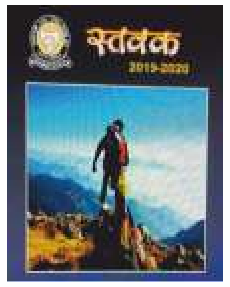

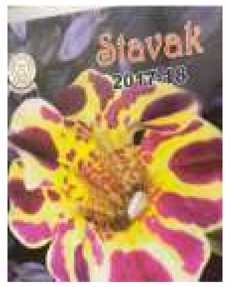

SHYAM LAL COLLEGE (EVENING)

University of Delhi

G.T. Road, Shahdara, Delhi-110032

STAVAK 2024-25

SHYAM LAL COLLEGE (EVENING)

University of Delhi

Stavak

2024-25

अध्यक्ष का संदेश

ज्ञान का संगम, भविष्य की ओर अग्रसर

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हमारा महाविद्यालय एक और शैक्षणिक वर्ष 2024-25 की उपलब्धियों एवं नवाचारों को समेटे हुए अपनी वार्षिक पत्रिका "स्तवक" का प्रकाशन कर रहा है । स्पष्ट विचारों,आपसी सहयोग,विश्वास,जवाबदेही,दृढ़ इच्छाशक्ति एवं सकारात्मक दृष्टिकोण से बनी एक आदर्श टीम के रूप में हमने जो कुछ भी हासिल किया है,उस पर मुझे बेहद गर्व है। मैं अपने प्राचार्य, स्तवक पत्रिका (2024-25) के संपादकीय मंडल, शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को हमारे महाविद्यालय के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी की भावना की सराहना करती हूँ,और साथ ही इस संस्थान के विकास के लिए किए गए सभी प्रयासों के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

यह पत्रिका न केवल हमारे संस्थान के गौरवशाली अतीत और वर्तमान का प्रतिबिंब है, बल्कि हमारे उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। आज के गतिशील विश्व में, शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान नहीं, बल्कि कौशल विकास, नैतिक मूल्यों और सामाजिक चेतना का समावेश है। क्योंकि शिक्षा एक यात्रा है, कोई मंजिल नहीं। हमारी गवर्निंग बॉडी (शासी निकाय) यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि हमारा महाविद्यालय सभी आयामों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करे। इस मौके पर आप सभी को एक संदेश देते हुए, यह विश्वास दिलाना चाहती हूँ कि हमारा कॉलेज प्रशासन आपकी क्षमताओं को विकसित करने के लिए हमेशा तत्पर रहेगा । क्योंकि हम अपने सभी विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं । यह महाविद्यालय आपको हर तरह से हर संभव सर्वोत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए समर्पित है। लेकिन यह समर्पित भाव एक तरफा नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को भी उसी समर्पित भाव से कॉलेज के विकास में साझे लक्ष्य के रूप में अपना योगदान देना चाहिए।

यह पत्रिका आप सभी के लिए एक सशक्त मंच है,जहाँ आप अपनी रचनात्मकता,कल्पना और समसामयिक मुद्दों पर अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इसलिए इस मंच का भरपूर उपयोग करें; अपने लेख,कविताएँ आदि के माध्यम से अपने विचारों को संप्रेषित करें। मुझे विश्वास है कि आप सभी की प्रतिभा इस पत्रिका को और भी समृद्ध बनाने के साथ नए विजन की तरफ अग्रसर करेगी। आप सभी के समर्पण और दूरदर्शिता ने कॉलेज को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया है। आदर्श नेतृत्व और टीम वर्क ही हमारे आदर्श शैक्षणिक वातावरण की नींव है।

आइए, हम सब मिलकर इस पत्रिका को ज्ञान, प्रेरणा और सकारात्मकता के प्रकाश से भर दें,ताकि यह सभी के लिए उपयोगी और प्रेरणादायक सिद्ध हो।

शुभकामनाओं सहित,

श्रीमती सविता गुप्ता
(अध्यक्ष, शासी निकाय)
श्यामलाल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्राचार्य की डेस्क से संदेश

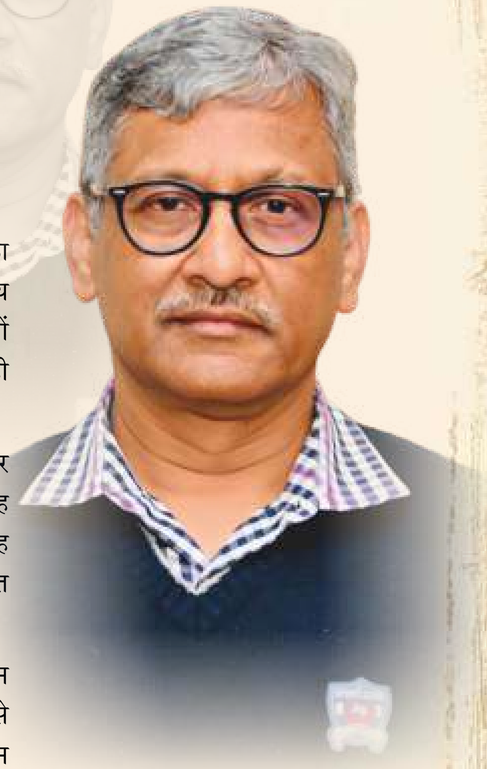

आज मैं इस बात से बहुत संतुष्ट और खुश हूँ कि 2024-25 सत्र के लिए हमारे महाविद्यालय की पत्रिका 'स्तवक' अपने सुन्दर क्लेवर के साथ प्रकाशित हो रही है। इसका पूरा श्रेय इस पत्रिका की संपादकीय टीम की मेहनत और लगन को जाता है। इस टीम से जुड़े समर्पित अध्यापकों और मेहनती विधार्थियों की समूची संपादकीय टीम को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ। इस टीम के अथकीय प्रयासों का ही प्रतिफलन है कि यह पत्रिका आज एक साझी अंतरदृष्टि के रूप में हमारे सामने है।

जैसा कि हम जानते हैं कि 'स्तवक' के कई अर्थ होते हैं। अनेक तरह के अलग-अलग फूलों को सजाकर बनाया गया रूप जिस तरह गुलदस्ता होता है, उसी तरह अलग-अलग विभागों की सहभागिता से यह पत्रिका 'स्तवक' गुलदस्ते की तरह अपनी महक बिखेरने के लिए तैयार है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका अपनी ज्ञान की रोशनी से विद्यार्थियों के लिए नए-नए रास्तों को खोलने का उपक्रम साबित होगी।

'स्तवक' केवल एक पत्रिका ही नहीं है, बल्कि यह हमारे विद्यार्थियों के लेखकीय अभिव्यक्ति एवं नवीन विचारों का एक कैनवास है। यह पत्रिका हमारे महाविद्यालय की उपलब्धियों और सफलताओं से संबंधित जानकारियों का संकलन ही नहीं करती है, बल्कि यह हमारे विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों, नॉन टीचिंग स्टाफ की भावनाओं एवं विचारों को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम भी है। यह पत्रिका लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने का अद्भुत उदाहरण है। यह पत्रिका हमें हमारे महाविद्यालयी इतिहास, उसकी संगठनात्मक संरचना, कॉलेज में प्राप्त शिक्षा के लाभ का मूल्यांकन करने के साथ ही, यहाँ की नीतियाँ से अवगत कराने में मदद करती है।

जीवन में कामयाबी हर व्यक्ति का सपना होता है, जिसे पूरा करने के लिए कठिन परिश्रम एवं अनुशासन की बहुत जरूरत होती है। हम अपने महाविद्यालय में अनुशासनात्मक माहौल को ज्ञान की धारा के माध्यम से जीवंत, सौहार्दपूर्ण और समावेशी बनाने के लिए हमेशा हर संभव कोशिश करते हैं। क्योंकि शिक्षा का मतलब सिर्फ ज्ञान और कौशल को हासिल करना ही नहीं होता, बल्कि वह हमें ऐसे जीवन के लिए तैयार भी करती है, जो समाज और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में काम आए। यही सोच आप सभी के भविष्य में बहुत काम आएगी, चाहे आप उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हो या अपने पसंद के कार्यक्षेत्र में काम कर रहे हों। यही वजह है कि हम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए 'स्तवक' पविका को रचनामक मंच के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस अवसर पर में पत्रिका की पूरी टीम के साथ सभी विभागों के संकाय सदस्यों, नॉन टीचिंग स्टाफ के सभी सदस्यों एवं प्रिय विद्यार्थियों को शुभकामनाएं और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। आप सभी की दृढ़ संकल्पनात्मक शक्ति, आपसी सहयोग, आशा के धरातल पर खड़े होकर नए विजन को तैयार करने एवं आत्म-आश्वासन के संयोजन से ही हमारे मुश्किल काम भी संभव हो पाते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि आप सभी के साझा प्रयासों से 'स्तवक' पत्रिका लगातार विकास के पथ पर आगे बढ़ती हुई, एक नए अवतार के साथ उम्मीद की नई रोशनी बिखेरती रहेगी।

प्रो. (डॉ.) नचिकेता सिंह
प्रिंसिपल
श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य)

संपादकीय

कॉलेज पत्रिका स्तवक 2024-25 का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें बहुत हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका कॉलेज के 56 वर्षों की अनवरत विकास-यात्रा तथा पिछले वर्ष की गतिविधियों का प्रतिबिंब है। स्तवक कॉलेज विद्यार्थियों के विचारों, प्रतिभाओं और आकांक्षाओं के जीवंत ताने बाने को सुन्दर आकार देने के लिए एक केनवास के रूप मे कार्य करती है। इस पत्रिका में इस देश और समाज के समक्ष जो चुनौतियाँ और संघर्ष है उससे संबंधित विचारोत्तेजक और भावनात्मक लेख, कविताएं, कहानी आदि है। साथ ही भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण भी इन रचनाओं में है जो आगामी व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। यह पत्रिका कोरे स्याही के अंक नहीं है। अपितु अभिव्यक्ति की शक्ति, विविधता और सक्षमता का साक्षात प्रमाण है। पत्रिका का यह अंक इससे पहले के संस्करणों की तरह हमारे छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की अटूट भावना का प्रमाण है। इसकी शैली मे भले ही व्याकरण सम्मत परिपक्वता न दिखाई दे किन्तु मौलिकता का अनगढ़ सौन्दर्य अवश्य दिखाई देगा।

स्तवक को इस स्वरूप मे लाने के लिए प्राचार्य प्रोफेसर नचिकेता सिंह जी द्वारा समय-समय पर पथ प्रदर्शन, उत्साहवर्धन और प्रबुद्ध चिंतक का साथ मिला है जिसके लिए स्तवक टीम आपका हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

पत्रिका के संपादक मण्डल के सहयोगी सदस्य – प्रोफेसर प्रमोद कुमार द्विवेदी, डॉ० संध्या वर्मा, प्रोफेसर सरिता, डॉ० सारिका त्यागी, डॉ० रोली रघुवंशी तथा डॉ० मेघा जैन का हृदय से आभार, जिनके अथक परिश्रम से यह पत्रिका आपके हाथों मे है।

छात्र संपादक मण्डल के सदस्य काजल और अंकित कुमार का भी हार्दिक धन्यवाद। स्तवक टीम की ओर से विशेष धन्यवाद कॉमर्स विभाग के डॉ टेक चंद का जिनके तकनीकी ज्ञान से हम लाभान्वित हुए। आप सबकी मेहनत से ही यह पत्रिका एक आकार ले सकी है।

प्रोफेसर सुनीता सक्सैना
मुख्य संपादक

EDITORIAL BOARD

Professor Pramod Dwivedi, Professor Sarita, Professor Sunita Saxena, Dr. Sandhya Verma, Dr. Sarika, Dr. Roli Raghuvanshi, Dr. Megha Jain

Student Editors

Kajal

Ankit Kumar

Table of CONTENTS

TOPIC	PAGE NO.
Message from the Chairperson	01
Message from the Desk of the Principal	02
संपादकीय	03
Editorial Board	04
English Section	06-24
Hindi Section	25-40
Annual Day Celebration	41
College Society Activities	44
Departmental Society Initiatives	59
Student Union	69
Academic, Cultural & Awareness Program	70
Student of the Year	78
Backbone of the College	79
SLC (E) in News	80

ENGLISH
SECTION

ONE NATION, ONE ELECTION:

Ayush Singhal
3rd Year, B A Programme

Introduction

The 129th constitutional amendment bill, recently proposed in the parliament, seeks to reform Indian electoral system dramatically, it proposes to introduce the concept on "One Nation, One Election" in India. The author of the essay seeks to present an unbiased and objective view as much as possible over the changes and whether it is feasible or not?

Historical background

With the dawn of independence, the very first task of utmost priority for the nation, was to provide a structure of government, system of governance addressing the fears and needs of all, after the enactment of the constitution of India in 1950, the very first task was to provide a legitimate government, with popular sanction, at both central and state level, thus first general elections, were held at both level in the year 1952. The year 1967 was a watershed moment in the Indian political discourse, the "aaya ram- gaya ram" culture started, that is, the start of defection culture, this resulted in the fall of government pre-maturely, leading to multiple polls, thus the cycle of simultaneous election started in 1952, broke off.

To bring back the same synchronization in the election cycles, which was not a well planned output of any scheme, but a co-incident the government is pushing forward to implement it in a well-planned manner.

Positive sight

The government is kicking off the agenda, of One nation, One Election citing the following issues pertaining to the current scheme of multiple polls:

1. The regular electoral cycles, leads the leaders to regularly makes strategies, for winning elections, diverting their attention from the work of public service.
2. The government officials are regularly deputed on election work, thus, losing focus from their main work.
3. The regular election cycles, generate voter fatigue, that is, the voter turnout comes down, with each subsequent election cycle.
4. One nation, one election would be more financially stable, while reaping benefits of economies of scale, as a huge state machinery and finances are involved in conducting elections.
5. The regular imposition of the Model Code of Conduct act as a barrier for the development of the region.

International Examples:

1. In Sweden, the elections of the municipality and nation-wide elections are conducted simultaneously.

2. In South Africa, the national and provincial elections, are held simultaneously.
3. In the USA, many state's voters choose not just the President of the US(POTUS) and up to twenty different contestants seeking multiple positions in both the federal and in state government like members of the Senate, House of Representative, State Governor, State Senator etc.
4. Indonesia in 2019, successfully switched over this concept.

Scheme of Implementation in India:

Under the aegis of the former President of India, Shri Ram Nath Kovind, in 2023 the union government, formed a committee, to enquire into the issue and propose a scheme for implementing it. The recommendations of the committee were as follow:

1. At the time of the next Lok Sabha polls, all the state assemblies and local bodies, be dissolved irrespective of their remaining term as a one-time measure, conduct elections of the Lok Sabha and state assemblies simultaneously and within next 100 days conduct local body polls
2. The governments collapsing in mid-term, should have fresh elections, new house immediately and shall continue for the remainder of term
3. The electoral rolls prepared by the ECI, should be accepted as final rolls at local levels too, and be prepared in consultation with the State Election Commissions, after amending Article 324 of the constitution.

A Dissenting Note

Many psephologist and other experts while opposing the proposed scheme enunciate:

1. The proposition of financial stability may not be achieved as more EVMs, greater number of armed forces and government workers would be required to conduct the gigantic exercise.
2. The national narrative may subsume state level issue, this violates the very spirit of federalism. Moreover, the idea of regional parties and regional issues may disband.
3. The frequent election cycles keep the politicians on their toes, moreover, it has been alleged that the frequent sighting of the politicians in the public domain is due to the current process of multiple polls.
4. This one-time gigantic act might, debar people becoming newly enfranchised from voting, in near future and not during that election year, thus excluding a huge chunk of youth becoming enfranchised every year from voting till next election cycle.
5. Having a permanent election conducting body would become a fantastic waste of taxpayer money.
6. The very scheme proposed by the Ram Nath Kovind Committee seems faulty on the face of it only as, it proposes to conduct elections in case of fall of government in mid term thus conducting multiple polls but with reduced life of the recently won popular mandate government.

The Allegation:

The opposition political parties, while opposing the scheme alleged, as the current government doesn't hold mandate in the Rajya Sabha since coming to power in 2014, so to bypass this hurdle simultaneous polls help it to form government in many other states thus gaining majority in the Rajya Sabha too.

Legal Challenges:

The current legal framework cannot accommodate such a scheme, major change would be required in the constitution and in other laws, rules and regulations. The Working Paper of One Nation, One Election by the Law Commission in 2018 called to change Article 83,85,172,174,356 of the constitution, rule no. 198 of the Lok Sabha be either omitted or be made defunct as it calls for no confidence motion.

Legal experts are of the opinion, making rule no 198 defunct would change the parliamentary system of government, and introduce a form of presidential system, from backdoor, as now once a government is elected then it could not be removed by a no confidence motion, thus making the cabinet, kind of irremovable, to over come this weakness the rule 198 could be shaped into German model of no confidence motion wherein, before introducing the motion the presenting party must provide a alternate government to the nation.

Furthermore, there would be backlash from the opposition, it is highly likely it would be challenged in the apex court too, on many grounds like violation of spirit of federalism, that is a part of the "basic structure doctrine of the constitution", violation of Article 14 of the constitution, that is, "Right to equality" etc.

Conclusion:

Although the scheme may look fishy on the face of it, however, the government must thrive to promote, a more productive and democratic open discourse in the public domain, in media, in the parliament etc, to make people aware about it, its shortcoming, address it and acknowledge it.

Rare Earth Elements

According to the "International Union of Pure and Applied Chemistry", Rare Earth metals are a family of 17 elements in the periodic table . It involves 15 Lanthanide group elements plus Yttrium and Scandium. These elements are Called rare-earths because they are very hard to be found in a single ore and are very hard to process. Rare Earth Elements (REE) have a wide range of industrial applications. Ensuring proper of availability of rare earth elements is essential for developing clean energy technologies.

Semiconductors, wind turbines, electric cars, military equipments, space rockets, smart phones, broadband equipments etc. require rare earth elements in their manufacturing. China monopolises in terms of reserves of rare earth elements

whereas India comes on the fifth spot. A country with abundant reserves of rare earth elements may lack behind in proper utilisation of those reserves due to lack of proper infrastructural facilities. United states with less reserves as compared to India is currently a major rare earth element producer whereas India still trying to develop infrastructure for the production of rare earth elements.

Indian Rare Earths Limited (IREL) was created in 1949 and till now it remains as India's largest producer and exporter of rare earth elements. IREL exports low-value rare earth ores as compared to China. Also over–dependence on china and America may become problematic for India in the case of a military conflict. A supply chain of minerals such as Cobalt, Nickel, Lithium and 17 rare earth elements are needed for Indian electric vehicle and telecom sectors. Lack of strong political support is also hampering Indian Rare–Earth ambitions.

Indian government is taking various steps to eradicate these problems.

Indian government has started incentivising exploration of rare earth elements. Sustainable sea-bed exploration by "Oil and Natural Gas Corporation" is also helping India to find new Rare – Earth sites. The 'National Critical Mineral Mission' was announced by Indian government on 23 July, 2024.

This mission has two objectives :-

[1]. To secure India's Critical mineral supply chain by ensuring mineral availability from domestic and foreign sources.

[2] Strengthening the value chains by enhancing technological, regulatory and financial ecosystems to foster innovation, skill development and global competitiveness in mineral exploration, mining , beneficiation, processing and recycling.

India must promote proper infrastructure development as well as political and economic support to achieve self-sufficiencies and export capabilities in terms of Rare Earth Elements.

Rahul Jaiswal
1st Year, B A Programme

Held by a Thread

Life and death—what do they mean?
No fear, no grief in what's unseen.
A breath, a blink, a shattered frame,
Then silence whispers out your name.

A vessel made of fragile glass,
Reflections of a moment passed.
It cracks, it breaks, it disappears,
And leaves behind no weight, no tears.

A fraying rope, two roads apart,
Both pull, both strain the quiet heart.
One says live, the other fade,
But neither choice feels truly made.

The ticking clock, the dying light,
The ache that lingers every night-
They don't disturb, they don't define;
This fate was never truly mine.

Forget the fear, forget the end,
I've never begged the rules to bend.
I walk the line with quiet grace-
No race to win, no time to chase.

So when they ask me what I see,
I'll simply say:
"To me, it's all the same to be."

- Shivam Tripathi

LADDER
OF LIFE

"Looks are a fading bloom," I often heard,
"But money rules the world," was the common word
Sacrifice, they say, paves the Success's way,
And sweat dissolves all obstacles in a day.

But I've seen hard workers, tired and worn out
Their efforts lost, and their dreams torn out.
While luck, like a changing wind, can take you far,
That's what I've always heard, like a distant star.

My friends, life's truths are fractured & incomplete,
We all seek a ladder for our climbing feet.
Like people or snakes, we all need a way,
To rise from darkness, towards a brighter day.

Effort, chance, and work, a three-part line,
With faith as our guide, and hope as our sign.
So push against the wall, though it may seem,
Like a giant blocking our hopeful dream.
Believe and strive, even when paths are steep,
for in every heart's courage, aspirations leap.
"Looks are a fading bloom," I often heard,
"But money rules the world," was the common word.

Nikash Jha
B Com (H)
3rd Year

Empowering Uneducated Middle and Upper-Middle-Class Women: A Call for Inclusive Opportunities

In a rapidly developing society, where technological advancements and globalization are shaping the workforce, a significant section of our population remains neglected—the uneducated middle and upper-middle-class women aged between 35 to 65. These women, despite their willingness to work and contribute to society, find themselves trapped in financial insecurities and societal expectations that limit their opportunities.

While economic hardship is often associated with the lower-income groups, the plight of middle and upper-middle-class women remains largely unspoken. Unlike lower-income women, who can take up jobs as maids, cooks, or domestic helpers without much societal scrutiny, these women face an unspoken stigma. They cannot engage in menial jobs due to societal expectations and family pressures, yet their financial struggles are no less pressing.

Many of these women turn to alternative sources of income such as online data entry, typing jobs, or freelance work. Unfortunately, a large number of them fall prey to fraudulent schemes, where they are asked to pay upfront fees for jobs that never materialize. The digital world, while offering hope, also exposes them to cyber scams, making their financial insecurity even more severe.

Several real-life incidents also highlight the growing vulnerability of women to fraudulent work-from-home schemes. In one case, a woman was allotted typing work where she was required to type entire novels on Notepad instead of Word. The terms stated that if more than one error appeared on a single page, no payment would be made. After she painstakingly typed thousands of pages, the company collected the files through a pen drive, transferred the data, and then rejected the work on the grounds of "errors," refusing to pay. In another instance, women were asked to open a link and "like" certain pages. While the first day's task was paid, from the next day onward the company began demanding money from them in order to continue receiving assignments. Similarly, a newspaper advertisement under the name of Naaptol promised work-from-home opportunities where women were asked to submit an initial payment in exchange for a laptop and a list of customer phone numbers to call. Once the payment was made, the company stopped responding altogether. In another case, women were lured with offers of packing work for a well-known brand of pencils, but after collecting advance money from them, the fraudsters simply disappeared. These examples reflect the exploitation of women's aspirations for dignified employment, showing how financial desperation and limited safeguards often leave them vulnerable to deceitful practices.

Recent discussions on women's employment in India point out that those above the age of 35 often encounter additional barriers when trying to re-enter or sustain themselves in the workforce. Many of them still have limited access to training and skill-building opportunities, which affects their chances of finding stable jobs. At the same time, official data on cybercrime indicates a steady rise in

online frauds, including fake work-from-home offers, which tend to exploit women and highlight their vulnerability in the digital labour space.

Our government and corporate sector have launched numerous initiatives aimed at youth employment and women's empowerment, yet little attention has been directed towards this specific group of women. If structured and accessible employment opportunities are made available, these women could play a pivotal role in driving economic growth.

One possible solution is the establishment of Women's Employment Centers in each constituency. These centers could offer skill-based training in areas such as tailoring, handicrafts, weaving, and digital literacy, along with job placements that provide flexible working hours to help women balance household responsibilities while earning a dignified income. In addition, they could conduct financial literacy programmes to educate women about recognizing fraudulent schemes and making informed investment decisions. Such centers could also open safe and verified avenues in the digital world, including opportunities as virtual assistants, content creators, online tutors, and government-affiliated typing professionals, thereby ensuring security and dignity in women's participation in the workforce.

A well-known quote by Eleanor Roosevelt, "A woman is like a tea bag—you never know how strong she is until she gets in hot water," perfectly encapsulates the resilience of these women. They are willing to adapt, work, and contribute, but systemic barriers and societal norms hinder their progress.

Instead of dismissing their struggles, it is crucial to recognize the urgency of their situation and take proactive measures. Even self-employment opportunities in sectors like organic farming, home-based businesses, or online handicraft sales can be promoted with government support.

Governments, NGOs, and private companies must come together to create an ecosystem where middle and upper-middle-class women have equal opportunities to earn, grow, and contribute to the economy. Policies that encourage flexible working environments, online safety measures, and community-driven employment projects must be implemented.

A country's progress is not just determined by its GDP but also by the empowerment of its people, especially its women. By recognizing the struggles of these women and providing them with structured pathways to success, we can create a more inclusive and prosperous society for all. It is time we acknowledge that financial independence is not a privilege but a right for every woman, regardless of her educational background. Investing in these women is an investment in the nation's future.

Dr. Megha Jain
English Deptt.

EAGLE, HIPPO & THE JUNGLE

"Who are we, an Eagle or a Hippo??"

In the jungle of a distant island, an eagle came out of a giant cage between the camouflage of trees. Eagle walked a little, turned around and started to walk in a circular direction. It was the trauma of being caged for this long, probably she never saw the world without the iron rods.

The sunlight coming from the filter of leaves of the trees falling on the face of the eagle. What a fine breed of bird that was, the sunlight was enough to be the sole witness of the depth of the eye and maintain the intensity of her face. It was a white-tailed eagle with shiny sharped nails and yellow beak looks too fresh to be seen on an eagle's body…showcasing a wretched story of her caged life. In a few minutes she realised the scale of the area she could walk on. The sea wind juggling across her body made it hard for her to stand still.

How are they flying so high?? are they just blowing?? Eagle thought looking at the birds in the sky Wait!! what's that? I can move these feathers?? It's in my control? I can open them so wide?? Later she stood opposite to the wind trying to fly. Wind pushed her back, and she rolled on the ground, stood up and tried again. All these wrangles with the wind and her wings, the eagle saw a bloat of hippos coming out of the shore, wrapped in mud, grunting squalling walking towards the forest.

The contrast between the liberty of freedom of these two creatures could be easily seen. Eagle moved a little far getting scared of the noise and could just imagine walking and running so freely not knowing how high she could fly. Suddenly the bloat saw the eagle beholding her wings and body, one of them got mesmerized with the glow and intensity of her body, few were scared, and rest was unaware of this creature.

Some got amazed with her beauty, some got scared of her beak and nail.

The boss hippo convinced the bloat that the eagle is harmful for them and told them to attack her to save their life

One opposed saying we could easily run to save us. Why attack her?

None listened. One after the other approached the eagle from both the side.

The moment the eagle noticed them, one of the hippos attacked her from behind, she jumped but fell, her feathers torn. Then they attacked the wings, she tried to defend her with her toes resulting pocking hippo's eye with her nails

Hippo wailed out loud. HELP!!! She'll kill us

Wicked hippo attacked her at once. First wings then body, neck…

Soon eagle got on the verge of death lying unconscious on the cold land, Hippo triumphed walked off like nothing happened

The sun who laid a crown on her with his light could do nothing but watch her die. Birds flying freely sat on the top of the trees & couldn't help her for their own safety. Wind got slow patting her for one last time...

She opened her eyes for the last time. The tall fat trees seem nothing but like the iron rods of the cage she's been throughout her life. She thought she was now free, but was she?

Closed her eyes for eternity in that drought silence of the forest.

The question is who are we??

Priyank Kumar Sinha
B Com (H) 3rd Year (VIth Sem)

DEMOCRACY AND YOUTH

The Role of Young Voters in Shaping India's Future

Dr. Sandhya Verma
Department of Political Science

Introduction

India is the world's largest democracy, with more than 950 million registered voters as per the Election Commission's latest estimates. Among them, nearly half are under the age of 35. This youthful demographic is not just a statistic — it is the heartbeat of the nation. Every election, millions of first-time voters step into polling booths, carrying with them aspirations, anxieties, and ideas about the India they want to inherit and shape.

The question we must ask is: are young voters passive spectators in this democratic drama, or are they emerging as powerful actors who can determine the direction of India's political future? The answer lies in understanding the relationship between democracy and youth—a relationship that is both full of potential and fraught with challenges.

The Promise of Youth in a Democracy

Democracy thrives on participation, and youth represent energy, creativity, and a willingness to question established norms. Historically, young people have been at the forefront of movements for change. In India, the freedom struggle saw the involvement of student leaders, revolutionaries, and youthful visionaries. In recent times, young voices have shaped public debates on climate change, women's rights, digital freedoms, and anti-corruption movements.

When young voters engage seriously in democracy, they bring: - Fresh Perspectives: Young people are less tied to rigid ideological positions and more open to innovation. - Technological Savvy: Their digital literacy makes them powerful agents of information dissemination. - Idealism with Energy: They often see politics not just as governance but as a tool for transformation.

The Numbers Speak

India's demographic dividend is its greatest advantage. According to recent data, around 15 million young Indians turn 18 every year, becoming eligible to vote. This surge makes the youth vote a decisive factor in Lok Sabha and state elections. In constituencies with closely contested battles, the turnout of young voters can swing results dramatically.

Political parties are aware of this power. From student wings to social media campaigns, much effort is directed at winning the hearts and minds of young citizens. The rising trend of celebrities, influencers, and sports icons being mobilized during elections reflects how seriously youth votes are being courted.

Challenges in Youth Participation

Despite their numerical strength, youth voter participation in India is not as robust as it could be. Several challenges weaken their impact:

1. Apathy and Disillusionment Many young people perceive politics as corrupt, self-serving, or irrelevant to their lives. This cynicism often leads to disengagement.

2. Urban–Rural Divide While urban youth may access political debates through digital platforms, rural youth often face barriers like limited information, migration for work, and lack of

awareness about voter registration.

3. First-Time Voter Confusion Many students and young workers who move away from home struggle with documentation and procedures to register in new constituencies.

4. Influence of Misinformation The digital space, though empowering, is also full of half-truths and propaganda. Young voters may fall prey to misleading narratives without adequate media literacy.

Democracy as a Classroom for Citizenship

One way to strengthen democracy is by treating it as a living classroom. For young voters, casting a ballot should not be a one-day ritual but part of a larger journey of civic learning. Educational institutions, student unions, and even teachers play a critical role in cultivating democratic habits — debate, discussion, dissent, and dialogue.

As teachers, we often notice how students passionately argue about global issues like climate change or social justice but hesitate to engage with local politics. This gap needs to be bridged. Democracy is not only about grand national debates; it is also about municipal elections, panchayats, and campus-level decision-making. By engaging locally, youth can see the immediate impact of their choices.

The Digital Generation: A Double-Edged Sword

Today's youth are digital natives. Social media platforms like Instagram, X (formerly Twitter), and YouTube have become spaces of political conversation. Hashtags mobilize protests, memes criticize leaders, and online petitions influence decisions. This new form of engagement is powerful, but it also raises questions:

- Does online activism translate into real voting behavior? - Are young people able to distinguish between genuine issues and manufactured trends? - Can social media empower critical thinking instead of amplifying echo chambers?

The digital world, if navigated wisely, can complement the ballot box. But if it replaces real participation, democracy risks becoming a performance rather than practice.

The Youth as Guardians of India's Future

The importance of youth participation goes beyond numbers. India is at a crossroads — grappling with unemployment, environmental crises, gender inequality, and global competition. Decisions made today will affect the lives of young people for decades to come. If they do not claim a seat at the table, policies may be shaped without their interests in mind.

Consider climate change: it is today's youth who will inherit the consequences of environmental policies, or the lack thereof. Similarly, decisions on education reform, digital regulation, and labor rights are essentially decisions about their future.

Thus, when young voters participate, they are not just exercising a constitutional right—they are securing their stake in the nation's destiny.

Strengthening the Youth Vote

If we want youth participation to become the backbone of Indian democracy, several measures are essential:

1. Voter Education Campaigns Schools, colleges,

and universities should integrate civic literacy into their curriculum. Students should not just learn about the Constitution in theory but also about voter registration, rights, and responsibilities.

2. Easier Access to Voting The Election Commission can simplify processes for migrant students and workers by allowing easier transfer of voter ID across constituencies.

3. Campus Democracy Student elections, debates, and participatory councils can serve as practice grounds for larger democratic engagement.

4. Youth in Political Leadership Political parties should encourage young candidates and create space for their voices rather than treating them as mere vote banks.

5. Combating Fake News Media literacy workshops can help young voters critically evaluate the flood of information online.

A Call to Action

India's democratic journey is only as strong as the faith and participation of its citizens. For young voters, the ballot is more than ink on a finger—it is a statement of ownership, a declaration that "This is our country, and its future matters to us."

The challenge is not just to get youth to vote once but to make voting and civic responsibility a lifelong habit. Every classroom discussion, every campus debate, and every thoughtful conversation contributes to building informed citizens who will shape India's destiny.

Conclusion

Democracy without youth is like a river without flow—stagnant and lifeless. The engagement of young voters infuses new energy into the political system, challenges complacency, and ensures accountability. India, with its vast youthful population, stands at a unique moment in history. If its young citizens embrace their democratic power, the country can set an example for the world.

The future of Indian democracy is not in the hands of seasoned politicians alone—it rests equally in the hands of first-time voters walking into polling booths, full of hope and determination. As teachers, mentors, and citizens, our role is to remind them that democracy is not inherited; it is nurtured.

The ballot is their voice. The nation is their responsibility. The future is their canvas.

PRESIDENT TRUMP'S RECENT ANNOUNCEMENT AND THE INDIAN STOCK MARKET: THE ROLE OF RECIPROCAL TARIFFS - AN ANALYSIS

Sachin Bisht
B Com (H) VI Semester

Abstract

On April 2, 2025, U.S. President Donald Trump announced a sweeping set of reciprocal tariffs affecting over 180 countries, including a significant 26% tariff on imports from India. This article explores the immediate and potential long-term effects of these tariffs on various sectors of the Indian stock market, including electronics, textiles, automobiles, and pharmaceuticals.

Introduction

The trend in international trade is normally influenced by the policies of large economies, and recent trade policy trends in America have been creating immense uncertainty among Indian investors. President Trump's declaration of tit-for-tat tariffs, with a consistent base tariff of 10% coupled with an additional huge tariff of 26% on goods from India, has caused turmoil in the Indian stock market as people worry about bilateral trade's future. This protectionist strategy destabilizes established trade patterns and encourages investors to re-evaluate the profitability of firms heavily dependent on U.S. exports. Industries like electronics, textiles, autos, and pharmaceuticals are most at risk, each with its own set of challenges and opportunities in the face of the new tariffs. As the market responds to such developments, it is also important for stakeholders to pay close attention to the changing trade environment in order to make wise investments during such uncertainty.

Immediate Market Response

In the wake of the announcement, the Indian stock market saw a slight fall, with the Gift Nifty declining around 0.21% at 08:15 AM on April 2, 2025. This initial response indicates investor nervousness over the probable economic impact of the tariffs. The IT and automobile sectors will likely see selling pressure as investors revalue the profitability of export-dependent companies to the U.S.

Sectoral Analysis:

1. Electronics Sector: The electronics sector, which contributed 32% of its exports to the U.S. during the fiscal year ending March 2024, is set to face serious challenges. But firms such as Apple, which have relocated some assembly work to India, might find it in their interest to continue exporting from India even after the imposition of new tariffs. The combined 34% tariff on Chinese imports might give Indian manufacturers a competitive advantage.

2. Textile Industry: The textile sector, which sent $9.6 billion worth of goods to the U.S. in FY24, might find a silver lining in the new tariffs. Since Indian textiles will face a 34% tariff on Chinese imports and a 46% tariff on Vietnamese goods, Indian exporters will become more competitive. Major players like Welspun, Trident, and Arvind Limited will stand to gain from this change in market scenario.

3. Automotive Industry: The automotive industry will likely experience a major headwind with the imposition of a 25% tariff on auto imports. Firms such as Bharat Forge and Samvardhana Motherson, which get a large percentage of their revenues from U.S. exports, can expect their profitability to go down. Higher costs due to tariffs may make them less competitive in the U.S. market.

4. Pharmaceutical Industry: In an unexpected turn, President Trump exempted pharmaceutical exports from the tit-for-tat tariffs, easing the burden for firms such as Sun Pharma and Dr. Reddy's Laboratories, which have a significant dependence on the American market. The exemption may help support the pharmaceutical industry, enabling it to continue its growth pace despite the wider market woes.

Conclusion

President Trump's announcement of reciprocal tariffs has brought a wave of uncertainty in the Indian stock market, impacting sectors like automobiles, electronics, and textiles. Immediate reactions show a negative sentiment among investors, though the long-term effect may differ as the market adapts to the changing trade scenario. The pharma industry's exemption from tariffs is some hope, which means that not all sectors will be hit. As things change, players need to remain alert and nimble to go through the intricacies of global trade and how it affects the Indian economy.

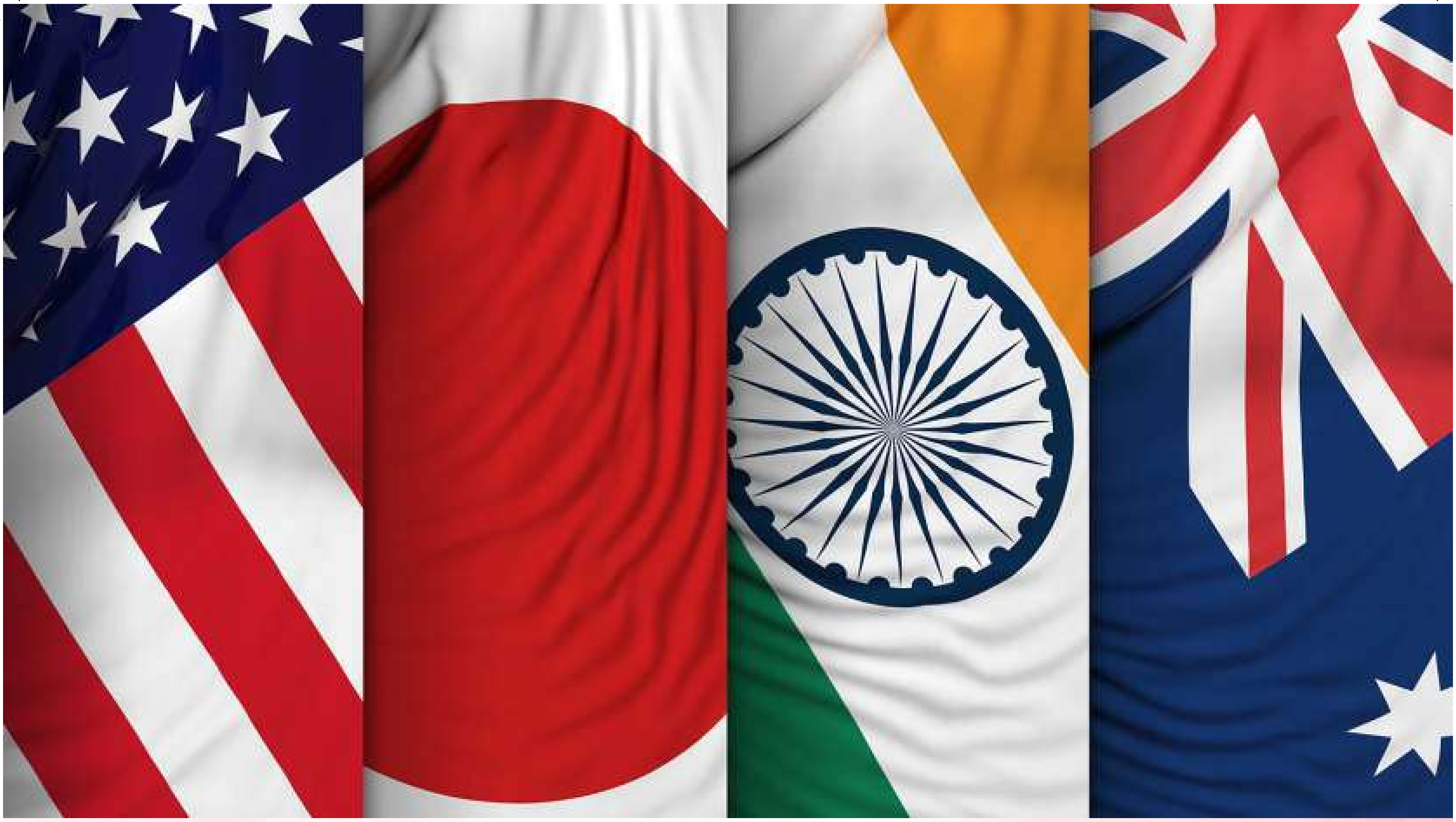

QUAD

Akash Yadav
B.Com (Prog) VI Sem.

What is QUAD

QUAD is also known as the Quadrilateral security dialogue and is a strategic forum for economic cooperation among four countries, the United States of America, Japan, India and Australia.

Objective of the QUAD Nations

1. The QUAD is aimed at promoting regional security and economic cooperation in the Indo-Pacific region.
2. The four countries share a common interests in maintaining a free and open Indo-Pacific, promoting democracy, human rights, and the rule of law, and countering China's supremacy in Indo-Pacific region.
3. The QUAD has held several meetings at the ministerial and leader's level to discuss issues such as maritime security, infrastructure development and supply chain resilience.
4. The QUAD is seen as mechanism for balancing China's influence in the Indo-Pacific region, although its members have stressed that it is not a military alliance and is open to other countries, who share their values and interests.

Formation of QUAD Alliance

1. 2007 : The QUAD was initially formed in 2007 during and informal meeting of leaders from the association of south Asian Nations (ASEAN). It was Japanese prime minister Shinzo Abe.

Who first proposed the idea of creating the QUAD.

2. 2012 : The Japanese Prime Minister highlighted the concept of the Democratic security diamond in Asia. Which include the USA, Japan, India and Australia.
3. 2017 : Once again confronted with the growing danger posed by china, the four nations revitalized the QUAD by expanding its goals and devising a system that aimed to gradually establish an international order based on rules.

India, Japan USA and Australia held the frist QUAD talks in Manila (Philippines) ahead of the ASEAN Summit 2017.

4. 2020 : The trilateral India,USA, Japan Malabar Neval exercise expanded to include Australia making the frist official grouping of the QUAD since its resurgence in 2017and the first joint military exercise among the four nations.

5. 2021 : The QUAD leaders met virtually because of pandemic devolution this year (It is COVID -19 duration year) and later release a joint statement title The spirit of the QUAD.

WHAT ARE THE OPPORTUNITIES FOR INDIA QUAD AGREEMENT

Countering China

The maritime space is a lot more important to china than engaging in opportunistic land grab attempts in the Himalaya.

Emerging as a net security power

There is a growing greater power intrest in the maritime sphere, especially with the arrival of the concept of India -Pacific. For instance, many European countries have currently released their Indo-Pacific strategies.

Last year QUAD summit

On September 21, 2024 , president Joseph R.Biden , hosted prime minister Anthony Alpanese of Australia, Prime Minister Kishida Fuamio of Japan and Prime Minister Narendra Modi of India in Washington (USA), delaware for the four QUAD leaders summit.

Focus on that meeting

Benefit partner countries across Indo-Pacific region.

Pandemics and disease, Natural disaster, Maritime security, Building high standard physical and digital infrastructure, Climate change, Next generation technology etc.

Overall QUAD leaders meetings

Past four year, six times including twice virtually. QUAD foreign ministers meetings eight times, most recently Tokyo(Japan).

India will host 2025 QUAD leaders summit.

Physical Activity Is Incredibly Important For Overall Health And Well-being. Here Are Some Key Reasons Why:

1. Physical Health Benefits

Improves cardiovascular health: Regular activity strengthens the heart and improves circulation.

Maintains a healthy weight: It helps burn calories and prevents obesity.

Strengthens muscles and bones: Weight-bearing exercises boost bone density and muscle strength.

Boosts immunity: An active lifestyle supports a stronger immune system.

2. Mental Health Benefits

Reduces stress and anxiety: Exercise releases endorphins, the "feel-good" hormones.

Improves mood: It can help combat depression and increase overall happiness.

Enhances brain function: Physical activity improves memory, focus, and cognitive abilities.

3. Chronic Disease Prevention

Reduces the risk of type 2 diabetes, high blood pressure, stroke, and certain cancers.

4. Better Sleep

Regular movement can help you fall asleep faster and deepen your sleep.

5. Improved Quality of Life

Increases energy levels, mobility, balance, and flexibility, especially as you age.

Himanshu Badal
Cricket Coach

TOYING WITH MINDS: THE HIDDEN LESSONS IN PLAYTHINGS

Anniket Verma
B.Com (Prog.), Semester - VI

Roland Barthes, a well-known French literary theorist, wrote an essay titled "Toys" as part of his 1957 book *Mythologies*. In this essay, Barthes delves into the hidden meanings behind the toys given to children. He argues that toys are not merely innocent objects for entertainment, but powerful tools used by society to shape children's thinking and behavior from a very young age. According to him, toys are a reflection of the adult world. They are designed to teach children how to accept the world around them as it is, without questioning it. In other words, toys act as a way of conditioning children to fit into pre-decided social roles and norms.

Barthes points out that most toys are simply miniature versions of things adults use—like cooking sets, cars, houses, weapons, and cleaning tools. By giving these toys to children, society is not encouraging free thinking or creativity. Instead, it is training them to imitate adult life. For instance, when a girl is given a kitchen set or a doll, she is being prepared to take care of a household. When a boy is given a toy gun or car, he is being introduced to strength, control, and action. This leads to early social conditioning, where children are not free to explore or imagine new possibilities but are expected to recreate what already exists.

Another major concern Barthes raises is about the material used to make toys. He compares old-fashioned wooden toys with modern plastic ones. Wooden toys, according to Barthes, were more natural, simple, and open to interpretation. They allowed children to project their imagination and create their own meanings. On the other hand, plastic toys are hard, shiny, and fixed in shape and purpose. There is nothing left for the child to imagine—they simply follow what the toy tells them to do. This shift in material from wood to plastic symbolizes a deeper change in society's approach to childhood—from freedom to control.

Barthes also criticizes how toys reinforce gender roles. In many cultures, especially in French society at that time, girls were given dolls, toy brooms, and kitchen sets, while boys received cars, soldiers, and mechanical toys. This clear separation teaches children from a very young age what is 'appropriate' for their gender. It limits their growth and opportunities by pushing them into socially accepted roles rather than letting them discover their interests freely.

Finally, Barthes believes that children are naturally imaginative beings. If left to their own devices, they would play with sticks, stones, or even shadows, creating stories and games from their surroundings. But modern toys restrict this freedom by giving children fully-designed objects with predefined uses. As a result, the child becomes a passive user instead of an active creator. Barthes warns that this is a dangerous trend that reduces children's ability to think for themselves and discourages creativity.

In conclusion, Barthes' essay 'Toys' challenges us to think more deeply about the everyday objects we consider harmless. He encourages society to

allow children the space to grow, imagine, and choose their own future, instead of boxing them into adult roles from an early age.

Reading Barthes' essay made me realize how even the simplest objects like toys can have deep social meanings. I agree with his central argument that toys are used by society to mold children into future adults, often limiting their imagination and creativity. Today, many toys are based on movies, cartoons, or real-life tools, which means children are simply acting out pre-written stories instead of making up their own. This definitely reduces their freedom to explore ideas and express themselves in creative ways.

His point about gender roles also struck me as very relevant. Even now, in toy stores and advertisements, we see a clear divide between 'boys' toys' and 'girls' toys'. This affects how children see themselves and each other. I believe that every child should be given the freedom to play with any toy they like, whether it's a doll or a truck, without judgment.

However, while I mostly agree with Barthes, I think there can also be some value in realistic toys. For example, some children do enjoy pretending to cook like their parents or drive cars like they see in real life. It helps them relate to their surroundings and learn basic life skills through play. So perhaps the solution is not to remove realistic toys, but to also include open-ended and creative toys like building blocks, craft supplies, and natural objects that allow freedom of thought.

Overall, Barthes has opened my eyes to the hidden messages behind toys. His essay is a reminder that we need to support children's growth by giving them choices, encouraging imagination, and not forcing them to fit into adult expectations too soon.

Romanticizing Life While Failing Internals - The Duality

There's something so iconic about walking out of a disastrous exam, playlist blasting, sunset hitting just right, and whispering to yourself, “It's okay, I'm the main character.” That's the energy. That's the vibe.

We are the ones perfectly capable of scoring 13 out of 25 in a test and still posting “life's a movie” on our stories with a blurry café pic and Lana Del Rey playing in the background. It's giving delusion, It's giving coping - but also… it's giving art.

See, romanticizing life isn't just an aesthetic—it's survival. When deadlines are on our necks, professors moving mad, and sleep is a myth, we romanticize the smallest things: the smell of rain after a panic attack, a perfectly timed Spotify shuffle, that one iced coffee we can't afford but bought anyway.

It's not that we don't care about our marks, we do. We spiral over these at 2 a.m., cry about these in the group chat, then laugh about it 20 minutes later like nothing happened. That's the duality. That's how we function.

In one moment, we're journaling like we're figuring life out - In the next, we're submitting assignments we haven't even read the topic of. We light a candle, open our laptop, and stare at the screen like we're in a sad indie movie. No progress made, but the vibes? Immaculate (just as Declan Rice's free kicks against Madrid)

Because somewhere between academic pressure, job anxiety, and the quiet fear that nothing really makes sense anymore, we chose to romanticize. To find beauty in chaos. To curate our mess into a highlight reel. It's the only way we don't go completely insane.

And yeah, maybe we failed that internal. But we also made a memory, wrote a poem in our head while watching strangers on the metro, and found peace in a song that no one else knows because gatekeeping is obviously our forte.

So next time if someone says you are not serious, just remember—we're literally living in the ruins of late-stage capitalism, barely holding on, and still managing to serve looks, make playlists, and post aesthetic sunsets while crying inside.

It's not just romanticizing life. It's rebellion. It's resilience. It's…lowkey being delusional and honestly? that's self care.

- Shivam Tripathi

भाग

हिन्दी

आत्मचेतना की जागृति

नारी होना कोई पाप नहीं,
ईश्वर की दी हुई वरदान हो, कोई अभिशाप नहीं,
काली भी तुम, दुर्गा भी तुम,
प्रचंडिका भी तुम, महालक्ष्मी भी तुम,
चारों युगों में तुमने खुद को साबित कर के है दिखाया,
सतयुग, त्रेता, द्वापर हो या कलयुग,
तुम न कभी हो, घबरायी,
सतयुग में अनसूया बनकर, त्रेतायुग में सीता बनकर,
अपने सतीत्व, चरम शील और पवित्रता का प्रमाण दिया,
द्वापरयुग में द्रौपदी बनकर, कलयुग में सावित्री बनकर,
साहस, धर्मनिष्ठा , आत्मसम्मान,
बुद्धिमत्ता और समर्पण का प्रमाण दिया।

कलयुग में है तुम्हारी स्वयं से लड़ाई,
शिक्षा को अपना हथियार बनाओ,
क्योंकि करनी है तुमको,
आत्म–संकोच और आत्म संवेदना से लड़ाई,
अब बारी है अपने आत्मबल पहचानने की लड़ाई,
करो तुम निर्णय लेने की स्वतंत्रता से लड़ाई,
आत्म–ग्लानि और आत्म–बोध से भी करनी है लड़ाई,
तुम एक अच्छी बेटी, अच्छी पत्नी, अच्छी मां,
हो या नहीं, यह सोच कर घबराएं न,
क्योंकि यह है खुद की आवाज़ को पहचानने की लड़ाई,
यह है तुम्हारी आत्म निर्भर बनने की लड़ाई।

अंकित कुमार
बीए हिंदी ऑनर्स
तृतीय वर्ष

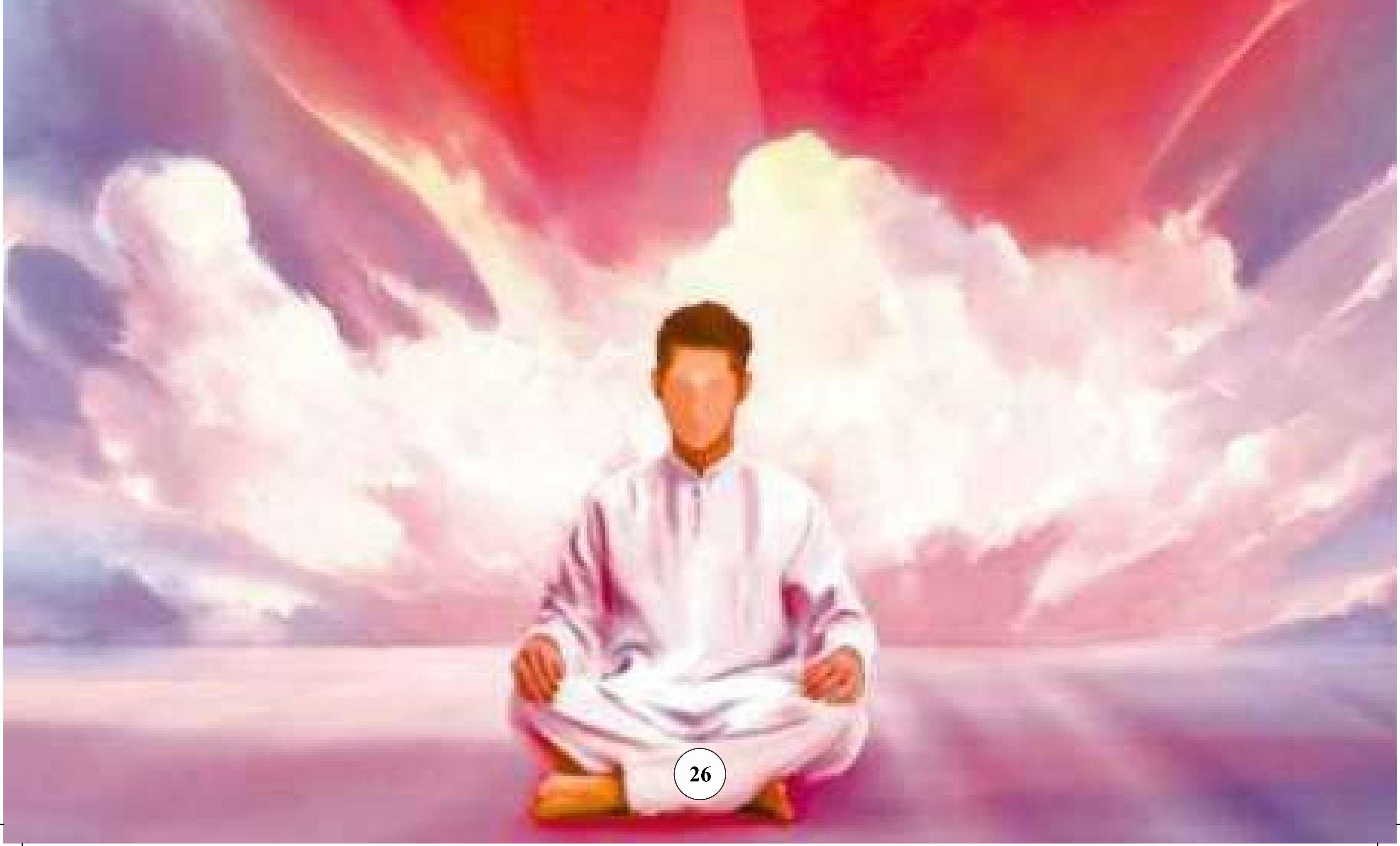

पहलगाम का आंसू

पहलगाम की वादियों में,
आज अश्कों का सैलाब है।
जहां कभी गूंजती थी हंसी,
आज मातम बेहिसाब है।

फूलों की घाटी में लहू की बूंदें,
किसी मासूम की चुप सी चीखें,
सवाल पूछ रही हवाओं से —
कब मिटेगी ये नफरत की परतें?

जिन हाथों ने दिया था प्यार,
आज उन्हीं पर बरसीं गोलियां,
क्यों उजाड़ा इस जन्नत को,
क्यों लहूलुहान कर दीं ये गलियां?

हर दिल ने पुकारा -
"रहमत बरसा ऐ खुदा,
पहलगाम को फिर से अमन दे,
जहां की हंसी लौटा दे ज़रा।"

धरती के वीरों का बलिदान,
बेकार न जाएगा,
हम फिर से उठेंगे,
हर आंसू को मिटाएंगे,
पहलगाम में फिर खुशियां लौटाएंगे।

जय हिंद!

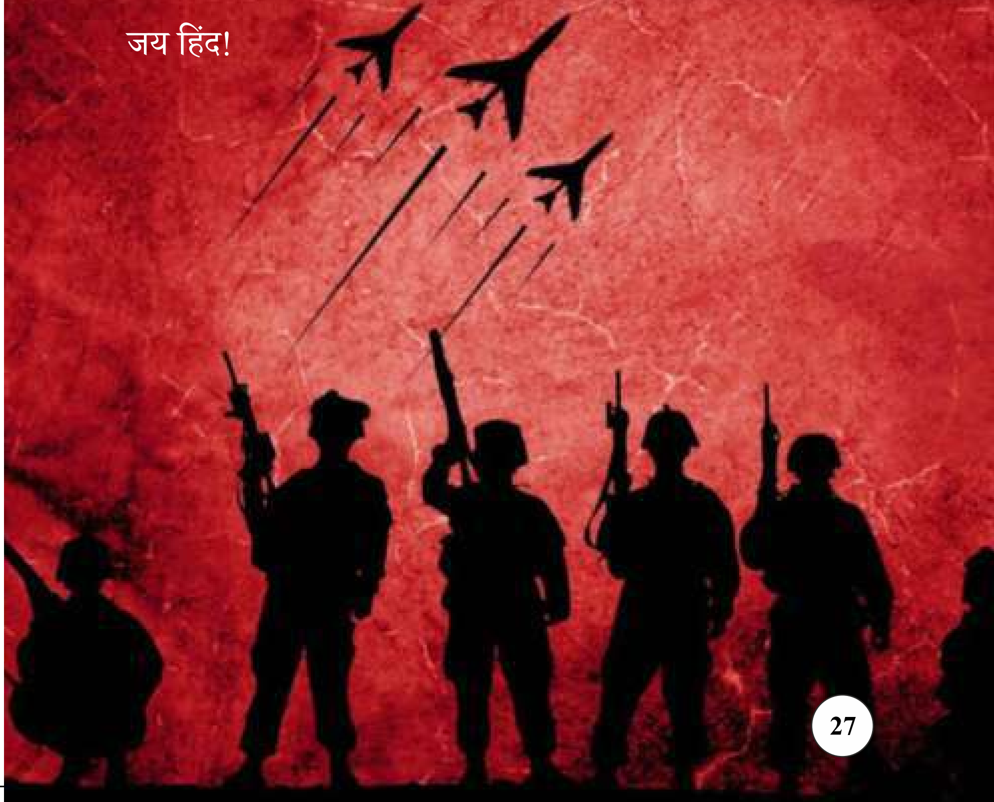

ऑपरेशन सिंदूर : वीरों की शौर्य गाथा

पहलगाम के आँसू मिटाने को,
वीरों ने संकल्प उठाया।
खून का कर्ज उतारने को,
ऑपरेशन सिंदूर चलाया।

धरती मां के आँचल को फिर से,
सिंदूर से सजाया जाएगा,
हर आतंकी के नापाक मंसूबे,
लोहे लेकर बुझाया जाएगा।

जब-जब वीरों का लहू खौले,
सिंदूर बन मातृभूमि में घोले,
हर सीने में उठे ज्वाला बनकर,
शत्रु की हर साजिश को तोड़े।

रात के अंधेरे में भी दीया जलाया,
ऑपरेशन सिंदूर से नफरत मिटाया।
वीरों के कदमों में आंधियां भी झुकें,
धरती मां की आन फिर महकाएँगे हम।

पहलगाम का हर आँसू,
अब वीरों की सौगंध बना,
खून के बदले खून से लिखा,
जय हिंद का प्रण बना।

चलो वीरों, अब हुंकार भरो,
ऑपरेशन सिंदूर से शत्रु का नाश करो,

आतंकी अंधेरों को चीरकर,
अब नया सवेरा करो।

जय हिंद! जय वीर!

सुजीत कुमार
बी ए ऑनर्स
राजनीति विज्ञान
तृतीय वर्ष

दिल्ली: एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर

भारत के हृदय में स्थित दिल्ली केवल एक राजनीतिक राजधानी नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य और विविध परंपराओं से निर्मित एक जीवंत और बहुआयामी नगर है। यह शहर उन सभी सभ्यताओं के पदचिन्हों को समेटे हुए है जिन्होंने इसे अपने शासन, कला और सामाजिक जीवन से समृद्ध किया। दिल्ली के पत्थरों, गलियों, स्मारकों और बस्तियों में इतिहास की परतें एक-दूसरे पर चढ़ी हुई मिलती हैं, जो इसे भारत की सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक-सांस्कृतिक धरोहर बनाती हैं।

प्राचीन दिल्ली: प्रारंभिक सभ्यताओं की छाप

दिल्ली का इतिहास महाभारत में वर्णित 'इंद्रप्रस्थ' से आरम्भ माना जाता है। पांडवों का यह नगर रणनीति, व्यापार और राजनीति का सशक्त केंद्र था। पुरातात्विक उत्खननों से भी यहाँ प्राचीन बसावटों, मिट्टी के बर्तनों और लौह-युगीन अवशेषों के प्रमाण मिले हैं, जो संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र हजारों वर्ष पुराना है।

तोमर वंश द्वारा स्थापित लालकोट और उसके बाद चौहान शासक पृथ्वीराज चौहान द्वारा शीर्षकित 'क़िला राय पिथौरा' दिल्ली के प्रारंभिक शहरी विकास की गवाही देते हैं। इन प्राचीन दुर्गों से स्पष्ट है कि दिल्ली उस समय भी राजनीतिक एवं सैन्य दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण थी।

मध्यकालीन दिल्ली: सल्तनत और मुगल

(क) दिल्ली सल्तनत का दौर:

12वीं से 16वीं शताब्दी तक दिल्ली सल्तनत के विभिन्न वंशों गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी ने अपनी-अपनी राजधानी दिल्ली में स्थापित की। कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा निर्मित कुतुब मीनार और कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद भारतीय-इस्लामी स्थापत्य के प्रारंभिक और अनूठे उदाहरण हैं। तुगलक़ों का किला, सिरी किला और फिरोज शाह कोटला भी दिल्ली की मध्यकालीन पहचान के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं।

(ख) मुगल काल- कला, स्थापत्य और संस्कृति का उत्कर्ष:

मुगल शासकों ने दिल्ली को सांस्कृतिक उच्चता प्रदान की।

शाहजहानाबाद,
लाल किला,
जामा मस्जिद,
हुमायूँ का मकबरा

आज भी भारत की वास्तुकला और इतिहास के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं। मुगल काल के दौरान साहित्य, संगीत, चित्रकला और शिल्पकला का अपूर्व विकास हुआ। दिल्ली ग़ज़लों, कव्वालियों, शायरी, सूफी परंपराओं और दार्शनिक विचारधाराओं का केन्द्रीय मंच बन गई।

औपनिवेशिक दिल्ली: आधुनिकता की ओर बढ़ते कदम

ब्रिटिश शासन के दौरान दिल्ली को एक नई रूपरेखा मिली। 1911 में दिल्ली को भारत की राजधानी घोषित किया गया, और इसके बाद सर एडविन लुटियंस तथा हर्बर्ट बेकर ने नई दिल्ली का निर्माण किया। इस समय निर्मित-

राष्ट्रपति भवन,
संसद भवन,
नॉर्थ और साउथ ब्लॉक,
इंडिया गेट

भारतीय प्रशासनिक प्रणाली के आधुनिक प्रतीकों के रूप में स्थापित हुए। इस दौर में रेलवे, शिक्षा संस्थानों और आधुनिक सड़कों ने दिल्ली को एक वैश्विक महानगर बनने की दिशा में अग्रसर किया।

स्वतंत्रता की बाद का दिल्ली-राष्ट्र की आत्मा

1947 के बाद दिल्ली ने शरणार्थियों के पुनर्वास, नए शहरी इलाकों के विकास और राजनीतिक केंद्र के विस्तार को करीब से देखा।

कनॉट प्लेस,
करोल बाग,
लाजपत नगर,
राजौरी गार्डन,

दक्षिण दिल्ली के अनेक उपनगर

देश के विभिन्न हिस्सों से आए लोगों के बसने से दिल्ली एक सांस्कृतिक मिश्रण बन गई। इसने स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक पहचान को मजबूत किया।

दिल्ली की सांस्कृतिक विविधता:

(क) भाषाई विविधता

हिंदी, उर्दू, पंजाबी, हरियाणवी, अंग्रेज़ी-ये सभी भाषाएँ दिल्ली के सामाजिक जीवन में समान रूप से प्रयुक्त होती हैं। यहाँ की भाषा-शैली में देसी बोली की सादगी और उर्दू की नज़ाकत का अद्भुत मेल मिलता है।

(ख) भोजन और परंपराएँ

दिल्ली का भोजन इसकी सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पुरानी दिल्ली के

परांठे वाली गली,
कबाब, बिरयानी,
चाट, गोलगप्पे,

दिल्ली की स्वाद-संस्कृति को अनोखा बनाते हैं। साथ ही दिल्ली में संरक्षित सूफी दरगाहें-जैसे हजरत निज़ामुद्दीन औलिया-सांस्कृतिक सहिष्णुता और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक हैं।

(ग) कला, साहित्य और रंगमंच

दिल्ली में

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (NSD),
साहित्य अकादमी,
राष्ट्रीय संग्रहालय,
राष्ट्रीय अभिलेखागार,
दिल्ली हाट,
इंडिया हैबिटैट सेंटर

जैसे संस्थान कला और साहित्य को निरंतर समृद्ध करते हैं। पुस्तक मेलें, थिएटर महोत्सव और कला प्रदर्शनियाँ दिल्ली को सांस्कृतिक राजधानी का स्वरूप प्रदान करती हैं।

स्थापत्य धरोहर और यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल

दिल्ली के कई स्थल विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं:

कुतुब मीनार
हुमायूँ का मकबरा
लाल किला

इसके अलावा पुराना किला, जंतर-मंतर, सफदरजंग का मकबरा, पुराना मेहरौली क्षेत्र-यह सभी दिल्ली को एक खुले संग्रहालय (open museum) की तरह प्रस्तुत करते हैं, जहाँ हर स्मारक अपने समय की कहानी कहता है।

दिल्ली इतिहास और आधुनिकता का ऐसा अनोखा संगम है जो भारत की आत्मा और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। यह शहर उन सभी परतों को समेटे है जिन्होंने भारत को आज का स्वरूप दिया-प्राचीन सभ्यताएँ, मध्यकालीन साम्राज्य, औपनिवेशिक संरचनाएँ और आधुनिक लोकतांत्रिक भारत।

दिल्ली को समझना दरअसल भारत की हजारों वर्ष पुरानी संस्कृति, राजनीति, आध्यात्मिकता, कला और सामाजिक विविधता को समझना है। यही कारण है कि दिल्ली को केवल एक शहर नहीं, बल्कि भारत का जीवंत इतिहास कहा जाता है।

धन्यवाद

डॉ. आकृति
इतिहास विभाग
श्याम लाल कॉलेज सांध्य
दिल्ली विश्वविद्यालय

लोकतंत्र

मेरे हिस्से की थी या तेरे हिस्से की, यह जीत तो थी किसी के हिस्से की
ना हम डिगे थे, ना तुम पीछे हटे थे
हम तो निडर थे, तुम भी ना डरे थे
हम भी पूरे जोश में थे, तुम भी पूरे उत्साह में,
हमने भी अपने विचारों की तोप चलाई थी तुमने भी अपने इरादों के गोले बरसाए,
हमने कुछ बचाने के वादे किए,
तुम्हारे कुछ इरादे थे,
हमारा आत्म बल कुछ और था, तुम्हारा संबंल कुछ और,
सच कहूं ए दोस्त यह जीत तो लोकतंत्र की है आम जन की है

डॉक्टर मनोज कुमार
राजनीति विभाग

युवा पीढ़ी और नशा मुक्ति का सफर

युवा हो तुम आगे बढ़ो, कुछ कर गुजरो
ऊंचाइयां छू लो, तुम आगे बढ़ो....
ये धुआं ये नशा रोकेगा तुम्हे
नशे की धुंध में फेकेगा तुम्हें
मुक्ति की ओर आगे बढते तुम्हारे कदमों को रोकेगा ये,
नई उम्मीद से तुम आगे बढ़ो,

छोड़ो ये जंजीरें तोड़ो ये जंजीरे जो बांधें मन को, ...युवा तुम आगे बढ़ो
खुले आसमान में सांसें लो अब ऊंची उड़ान तुम भरो,
युवा हो तुम आगे बढ़ो कुछ कर गुजरो....

जीवन की सच्चाई समझो, स्वयं को पहचानो, शक्ति को जगाओ, नशा मुक्त होकर,
जीवन को संवारो .....अब बस तुम आगे बढो, नशा मुक्त होकर खुशियाँ चुनो, युवा तुम
आगे बढ़ो, ऊंचाइयां छू लो......

सुबह की रोशनी में मुस्कुराओ ,
स्वास्थ्य की राह पर अब तुम आगे बढ़ जाओ
नशा मुक्त होकर, खुशियों को पाओ,
युवा तुम आगे बढ़ो कुछ कर गुजरो आगे बढ़ो ....

आगे का रास्ता है उज्जवल और साफ,
नशा मुक्त होकर दूसरों को प्रेरित करो, साथ में चलो
नशा मुक्त समाज में जीवन को खिलने दो,
युवा तुम आगे बढ़ो, ऊंचाइयों को छू लो अब बस तुम आगे बढ़ो....
जीवन की नई ऊंचाइयों छू ले जाओ. युवा तुम आगे बढ़ो....
नया नशा मुक्त समाज चुनो,
युवा तुम आगे बढ़ो बस अब आगे बढ़ो.....

डॉ. रेखा कश्यप
वाणिज्य विभाग

अब औरतों को डर नहीं लगता है

कलम, या तलवार से
वो डरती हैं उस मंगलसूत्र के भार से,
जो कब फांसी का फंदा बन जाए खबर नहीं
अब वो डरने लगी है पैरों में पहने जाने वाले उस
बिछिया और पायल से जो जंजीरों की तरह उसे कैद कर देगी
अब उसे डर लगता है मांग में भरे जाने वाले उस
सिंदूर से जो उससे ही उसकी पहचान छीन ले जाएगी
उसे डर लगता हैं बरसों से चले आ रहे परंपरा में जकड़े जाने से
जिसे न चाहते हुए भी अपनाना होगा
खुद को भुलाना होगा
बेबुनयादी रस्मों को भी निभाना होगा
उसे डर लगता हैं उस वक्त से जब उसके हाथों से
कलम छीन, कलछी थमा दी जाएगी
या उस घर से जो उससे बिना पूछे
उसकी बिदा कर अपना फ़र्ज़ निभाएगा
उसे डर लगता हैं इस सवाल से की जहां वो जाएगी
क्या होगा, अगर वहाँ से भी ठुकराई जाएगी,
क्या उसकी खिलखिलाहट हंसी उदासी में बदल जाएगी
जब मुस्कान की जगह उसके चेहरे पर उदासी छाएगी
वो कैसे सह पाएगी।

अपनी खुशियों को शर्तों के तराजू में तौलना होगा
सारी ख्वाइशों को भुलना होगा।
हाँ अब वो डरने लगी है सुहाग के श्रृंगार से
क्योंकि इसके बाद उसको घूंघट में रहना होगा
घूंघट में रहकर सब कुछ सहना होगा
सब कुछ सहकर भी चुप रहना होगा।
अब औरतों को डर नहीं लगता है
कलम, या तलवार से
क्योंकि जब वो कलम उठाएगी
ख़ुद सही मायने में समझ पाएगी
तभी वो अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़
अपनी पहचान बनाएगी

काजल
बी ए हिंदी ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

अभीप्सा

कभी-कभी सोचता हूँ
समय की गति को रोककर
सरित की पावन धारा में
बह कर;
कहीं दूर किरणों की सी चमक
वाले उन निशा में चमकते
छोटे -छोटे दूधिया टुकडों को
संजोकर, बस सांसे लूँ ;
और उस मलयज के साथ
जो हर रोज बड़ी ही आत्मीयता से
पुकारा करती है, मुझे....
किन्तु हृदय भागता हुआ
दिन भर की छुट्टी लेकर
मुझे शुन्य, बिरला, असहाय
छोड़कर चला जाता है।
और मेरी बुद्धि -
मै उसी दिनकर की
शीतल छाया में
बड़ी ही आत्मीयता से
भ्रमण करता हूँ।

विशाल शर्मा
बी ए प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष

परिवार और दोस्त

परिवार की छाँव में, मिलती है खुशियाँ,
सपनों की रंगीनियाँ, बुनती हैं खुशियाँ।
माँ की ममता, पिता का प्यार,
भाई-बहन का संग, जीवन का आधार।

दोस्तों के संग में, हंसते-खिलखिलाते,
सुख-दुख में साथी, हर पल साथ निभाते।
यादों की किताब में, भरते हैं रंग,
सच्ची दोस्ती का है, अनमोल ये संग।

साथ चलते हम, जीवन के सफर में,
हर मोड़ पर मिलते, अपनेपन के असर में।
परिवार की बातें, और दोस्तों की हंसी,
इनसे ही सजता है, जीवन का हर पल खुशी।

तो चलो मिलकर हम, प्रेम का दीप जलाएँ,
परिवार और दोस्तों संग, खुशियों के गीत गाएँ।
यह बंधन है अनमोल, इसे सहेज कर रखें,
जीवन की इस यात्रा में, एक-दूसरे को न भुलाएँ।

सचिन कुमार
बी ए ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

यात्रा-वृतांत

कुछ वर्ष पूर्व 2012 में दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्वाधान में एन.सी.सी. केडिट्स के साथ संपन्न हुई मेरी ज्ञानोदय यात्रा -२ के अविस्मरणीय पल मुझे हमेशा याद आते रहेंगे। इस यात्रा के दौरान मैंने अपने महाविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध अन्य महाविद्यालय के एन.सी.सी. केडिट्स के साथ राजस्थान के बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुर शहरों के साथ ही इन संभागों की मरुभूमि में भ्रमण किया। दिल्ली कैंट से शुरू हुई इस ज्ञानोदय-यात्रा का पहला पड़ाव बीकानेर में रहा जहाँ भारतीय सेना द्वारा किये गये भव्य स्वागत एवं मेज़बानी तथा समूची यात्रा के दौरान सेना द्वारा उपलब्ध कराई गयी पुख्ता सुरक्षा-व्यवस्था ने सभी के मन में भारतीय सेना के रणबांकुरों के प्रति सच्ची श्रद्धाभक्ति जगाई। सेना का यह सुरक्षा घेरा हमारे साथ हमेशा मौजूद रहा और इसी सुरक्षा-कवच के बीच रहकर हमने आर्मी हेडक्वार्टर एवं रेगिस्तान में आर्मी-कैम्प पर सेना के जवानों द्वारा एन.सी.सी. केडिट्स को दिए गये प्रशिक्षण का पूरा लाभ उठाकर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि करते हुए ज्ञानोदय -यात्रा की सार्थकता को सिद्ध करने का समुचित प्रयास किया। इस दौरान कई नवीन जानकारियाँ सभी को प्राप्त हुई।

इस यात्रा के यादगार पलों में सबसे अविस्मरणीय पल के रूप में जैसलमेर में 'तनोट बॉर्डर' (भारत-पाक सीमा) का अद्भुत नजारा रहा जहाँ पहले तनोट माता के दरबार में मत्था टेकने के कुछ समय बाद ही भारत-पाक सीमा पर पहुँच कर भारत माता के मरुआंचल में सभी ने एक स्वर में 'जय-हिन्द' का उद्घोष करते हुए श्रद्धापूर्वक भारत माता के प्रति अपना शीश झुकाया। इसके उपरांत रेगिस्तान में 'लोंगेवाला बॉर्डर' के समीप ही सुदूर क्षितिज में संध्याकाल में 'रेगिस्तान के जहाज' (ऊंट) पर सवारी करते हुए सूर्यास्त (सन-सेट) का विहंगम दृश्यावलोकन किया, तत्पश्चात सम-रिसोर्ट्स कैम्प में रात का ठहराव हुआ जहाँ रात्रि में राजस्थानी लोक कलाकारों द्वारा गायन, वादन एवं नृत्य के जरिये दर्शकों के समक्ष राजस्थानी लोक-संस्कृति की मनमोहक झांकी प्रस्तुत की गयी। प्रात:काल एक बार फिर ऊंट की सवारी (कैमल -राइडिंग) का लुत्फ उठाया गया। लेकिन इसी दौरान कुछ केडिट्स की तबीयत बिगड़ गयी जिनका सेना के डॉक्टरों एवं जैसलमेर प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराए गये डॉक्टरों ने तत्काल उपचार किया। जैसलमेर की जनता का भी इस दौरान अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ। हालाँकि केडिट्स के बीमार हो जाने की वजह से कुछ समय के लिए यात्रा में बाधा अवश्य महसूस हुई लेकिन शीघ्र ही समस्या से निपट लिया गया और सभी ने फिर सोनार दुर्ग की अट्टालिका पर पहुंचकर चैन की साँस ली।

जैसलमेर भ्रमण के बाद जब हम रात का सफ़र तय करके जोधपुर पहुंचे तो सभी इतने थके हुए थे कि यात्रा के इस अंतिम पड़ाव पर आकर हमें कई कार्यक्रम वहां निरस्त करने पड़े क्योंकि जोधपुर के होटलों में जाकर सभी पहले विश्राम करना चाहते थे और फिर हुआ यह कि एक बार आराम फरमाने लगे तो जल्दी से कोई भी तैयार नहीं हुआ। कुछ छात्र तो 'स्विमिंग पूल' में ही ऐसे मस्त हो गये लग रहा था कि शायद वे यात्रा की पूरी थकान 'स्विमिंग पूल' में ही मिटा देना चाह रहे हो। इसी तरह कुछ लोग जोधपुर के बाजारों में खरीददारी करते समय इधर -उधर भटक गये फिर काफी मशक्कत के बाद खोजकर सभी को एकत्र किया गया और तब जाकर जोधपुर के एतिहासिक स्थलों का भ्रमण किया गया।

वैसे तो मैं राजस्थान का ही मूल निवासी हूँ लेकिन सच तो यह है कि राजपूताना की रियासतों की स्थापत्य कला का सौन्दर्यबोध न केवल भारतीय बल्कि विदेशी पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आकर्षण का केंद्र रहा है। ऐसे में मरुभूमि के सौन्दर्य के आँचल में पसरे इन शहरों की ऐतिहासिक इमारतों जूनागढ़ फोर्ट, करणी देवी मंदिर, सोनार दुर्ग, मेहरानगढ़ फोर्ट एवं महाराजा उम्मेद भवन पैलेस की स्थापत्य कला ने सभी का मन मोह लिया। एक और बीकानेर के जूनागढ़ फोर्ट की सुन्दरता भुलाई नहीं जा सकती तो दूसरी और करणी देवी मंदिर में सफ़ेद चूहों की जमात पहली बार इतनी ज्यादा संख्या में देखने को मिली। इन किलों के संग्रहालय में ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संग्रहित वस्तुओं ने सभी को आकृष्ट एवं प्रभावित किया। मेहरानगढ़ फोर्ट की प्राचीर पर स्थापित विशालकाय बहुसंख्यक तोपों ने तो इतना आश्चर्यचकित कर दिया कि एकबारगी पुराने रजवाड़ों की बातें जेहन में उथल-पुथल मचाने लगी। इसी तरह 'उम्मेद पैलेस' महाराजाओं के शाही अंदाज और शानों- शौकत को दर्शाता हुआ नजर आया।

जोधपुर घूमने के बाद हम रात का सफ़र तय करके दूसरे दिन सुबह स्पेशल " ज्ञानोदय एक्सप्रेस " से दिल्ली कैंट पहुंचे और सभी ने ढोल -नगाड़ों की धुन में नाचते, गाते, थिरकते हुए एक-दूसरे से गले मिलकर एवं हाथ मिलाकर अपने - अपने घर के लिए विदा ली। यात्रा से विदा अवश्य मिल गई लेकिन मन- मस्तिष्क से वो गुजरे हुए पल शायद कभी विदा नहीं ले पाएंगे। सच कहूँ तो कई बार अनेक दिन तक अचानक ऐसा ही लगता रहा कि कहीं अभी भी " ज्ञानोदय एक्सप्रेस " में ही तो यात्रा नहीं कर रहा हूँ। वाकई किसी समूह में साथ मिलकर यात्रा करने का मजा ही कुछ और होता है ! ऐसे ही पल हमेशा के लिए यादगार बनते हैं।

डॉ. रामरूप मीना

हिंदी विभाग

प्रकृति का आँगन

एक छोटा सा शहर और उसमें एक बड़े आँगन वाला घर जिसमें रहती है, अपने माता-पिता के साथ बारह साल की 'प्रकृति'। माँ ने अपनी बेटी को यह नाम बड़े प्यार से इसलिए दिया था कि उन्हें स्वयं प्रकृति से बहुत प्यार था। माता-पिता दोनों ने ही बड़े शहर की अपनी अच्छी खासी नौकरी छोड़ कर छोटे शहर में बसने का फैसला इसीलिए लिया था क्योंकि उन्हें शहरों की भागदौड़ भरी, प्रदूषण युक्त, अर्थ और स्वार्थ केन्द्रित जिंदगी की जगह छोटे शहरों की सुकून और सादगी भरी जिंदगी ज्यादा रास आती थी।

एक बड़े से आँगन वाला यह घर प्रकृति के करीब था। इसमें नीम, आम, बरगद, शहतूत, पलाश आदि के बड़े-बड़े वृक्ष थे साथ ही अमरूद के कुछ पेड़, सुंदर फूलों की क्याँरियाँ थी। माँ ने एक छोटे से कोने में किचन गार्डन बना रखा था जिसमे मूली, गाजर, गोभी, टमाटर, मिर्च, बैगन आदि के पौधे भी लगा रखे थे। प्राकृतिक सौंदर्य का खज़ाना था यह घर प्रकृति का जन्म इसी सुंदर घर में हुआ था। इन्हीं पेड़ों के साथ वह पली-बड़ी और इन्हीं की धूप छाँह में खेलते हुए उसका बचपन बीता था। पक्षियों के कलवर से घर गूँजता रहता था। आँगन में के बीचों-बीच एक तुलसी का पौधा था जिसमें माँ पूजा के बाद उसमे जल देती और दिया जलाती थी। कभी बरगद, कभी पीपल और कभी केले के पेड़ की पूजा होती थी। बीमार होने पर तुलसी के पत्तों का काढ़ा और नीम के पत्तों के गरम पानी से नहाया जाता था। प्रकृति यह सब देखती थी तो उसके मन में बहुत सारे सवाल उमड़ते थे कि पेड़-पौधों की पूजा क्यों कि जाती है? क्यों उसके माता-पिता पेड़-पौधों की इतनी देखभाल करते हैं, उन्हें प्यार करते हैं। यही सवाल जब उसने अपने माता-पिता से किए तो उन्होंने बड़े ही प्यार और विस्तार से प्रकृति का महत्त्व उसे बताया। उन्होंने कहा कि प्रकृति ही परमात्मा है। यह सूर्य, चन्द्रमा, नदी, पर्वत, और पेड़ पौधे ईश्वर का मनुष्य को दिया गया सबसे अनमोल उपहार है। परंतु हर मनुष्य इसकी कीमत नहीं समझता। सूर्य से प्रकाश चन्द्रमा से शीतलता और नदियों से पीने के लिए जल मिलता है। यह पेड़-पौधे हमें ऑक्सीजन के साथ अनाज, फल और सब्जियाँ देते हैं। मनुष्य को इनकी कद्र करना चाहिए न कि उन्हें नष्ट करना चाहिए।

प्रकृति को अब प्रकृति का महत्व समझ में आ गया था। अब वह भी माता-पिता के साथ पेड़-पौधो की देखभाल करने लगी। उसको अब अपना भी जीवन ईश्वर का आर्शीवाद लगने लगा।

मोहम्मद फिरदौस

बी. ए. हिन्दी ऑनर्स

द्वितीय वर्ष

संतुलित जीवन

अयान का जीवन शहर की तेज रफ्तार दुनिया में मगन था। वह एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार से था लेकिन उसके जीवन में किसी चीज की कमी नहीं थी। उसके पास हर आधुनिक सुविधा थी जैसे स्मार्टफोन, लैपटॉप, घूमने के लिए बाइक, आसपास मॉल कैफे सभी कुछ उसके पास था; जिसमें वह पला बड़ा था। वह अपने दोस्तों के साथ अक्सर पार्टी करता, फिल्में देखता और गाड़ी में घूमता था। अयान का बचपन भी अन्य शहरी बच्चों की तरह ही बीता था। स्कूल में अच्छे अंक लाना, हर खेल में हिस्सा लेना और ट्यूशन की कक्षाओं में बैठना उसकी दिनचर्या का हिस्सा था। लेकिन इन सब के बावजूद अयान का दिल कहीं ना कहीं खाली महसूस करता था। उसे कभी भी वह सुकून नहीं मिला जो उसके दादा-दादी या चाचा चाची के गांव में रहने वाले बच्चों के पास था। उसके परिवार के लोग भी हमेशा कहते थे तुम्हारे जीवन में बहुत आराम है। शहर में सब कुछ है जीवन में मौज मस्ती है लेकिन क्या तुम कभी गांव में रहकर देख सकते हो कि यहां तुम्हारा मन लगेगा या नहीं। अयान को यह बात कभी समझ नहीं आई कि वह ऐसा क्यों कहते हैं। अयान शहर के हर कोने से वाकिफ था उसके लिए यह बहुत सामान्य था।

एक दिन जब गर्मियों की छुट्टियां पड़ी तो उसकी मां ने गांव जाने का प्रस्ताव रखा। उसने सोचा क्यों ना एक बार गांव में रहने का अनुभव किया जाए क्योंकि वह जब बहुत छोटा था तब गांव गया था और यह बात अब उसे ठीक से याद भी नहीं है। गर्मियों की छुट्टियों में अयान अपने परिवार के साथ गांव जाने के लिए तैयार हो गया। उसका मानना था कि यह सिर्फ एक छोटा सा अनुभव होगा लेकिन वह नहीं जानता था कि यह यात्रा उसकी सोच और जीवन को पूरी तरह से बदलने वाली है। गांव पहुंचते ही अयान को पहली बार यह महसूस हुआ की शहर की चका-चौंध और भाग दौड़ से परे भी एक और दुनिया है जो बहुत शांत और सुकून देने वाली है। वहां के लोग उनकी सरलता, एक दूसरे के साथ भावात्मक संबंध और हर रोज छोटी-छोटी खुशियों पर खुश हो जाना उसे अजीब लगता था। अयान के लिए सबसे बड़ी चौंकाने वाली बात यह थी कि गांव के बच्चे बिना किसी तकनीकी उपकरण के खुश थे वह बाहर घंटो खेलते थे, मिट्टी से खेलते थे, नदियों में नहाते थे और एक दूसरे के साथ बहुत समय बिताते थे जबकि अयान का अधिकतर समय मोबाइल पर गेम्स खेलने या सोशल मीडिया पर दोस्तों से चैट करने में ही बितता था। गांव में रहने पर कुछ दिनों बाद अयान ने महसूस किया की शहर में भले ही हर चीज मुट्ठी में हो, वहां का जीवन आसान हो, लेकिन वहां की हलचल और व्यस्तता ने उसे मानसिक रूप से थका दिया है। अब उसे गांव में सादगी और शांतिपूर्ण वातावरण ज्यादा आकर्षित करने लगा था

वह अब गांव के बच्चों से उनके जीवन के बारे में पूछता और उनसे बहुत कुछ सीखता। वह उनके साथ गांव के मैदान में खेतों में खेलता पेड़ों से फल तोड़कर खाता, तालाब में नहाता और रातों को तारों भरे आकाश में घंटों बातें करता। एक दिन गांव के छोटे से तालाब के किनारे बैठा अयान अपने चाचा से बातें कर रहा था चाचा ने उसे बताया देखो बेटा शहर में तुम्हारे पास सब कुछ है लेकिन गांव की वह सादगी सरलता और आपसी रिश्ते कहीं नहीं मिलते यहां लोग जितना बाहरी सुख चैन से दूर है उतना ही भीतर से संतुष्ट है। यह सुनकर अयान चुप हो गया उसे महसूस हुआ कि वह सच्चे सुख को अब तक समझ नहीं पाया था। वह सिर्फ बाहरी चीजों के पीछे दौड़ रहा था जबकि असली खुशी तो सादगी, रिश्तो और दिल से खुश रहने में थी। गांव में बिताए गए कुछ हफ्तों के बाद अयान के मन में शहर और गांव के बीच एक संतुलन बनाने का खयाल आया। अब उसे शहर की तेज गति में संतुलन और शांतिपूर्ण जीवन की आवश्यकता महसूस होने लगी थी। जब वह वापिस शहर लौटा तो उसने महसूस किया कि वह अपनी पुरानी आदतों से थोड़ा हटकर सोचने लगा था । अब वह अपना समय अपने परिवार के साथ अधिक बीतता और दोस्तों के साथ गहरे रिश्ते बनाने की कोशिश करता था।

अयान ने समझा की शहरी जीवन की आधुनिकता और तकनीक महत्वपूर्ण है लेकिन इन दोनों के बीच आंतरिक संतुलन को बनाए रखना भी जरूरी है। उसने अपने जीवन में धीरे-धीरे बदलाव लाना शुरू किया जैसे की अधिक समय बाहर खेलने के लिए बिताना, प्रकृति के साथ घंटों बातें करना, किताबें पढ़ना, सोशल मीडिया से थोड़ा दूर रहना और मोबाइल में गेम कम से कम खेलना। उसने जाना की बाहरी सुखचैन के साथ-साथ आंतरिक शांति भी जरूरी है शहरी लड़के की यह यात्रा उसे न केवल अपने जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करती है बल्कि हमें यह भी बताती है कि कभी-कभी हमें पुराने अनुभवों और सरलता को अपनाने से जीवन में संतुलन और शांति मिल सकती है। जीवन बहुत खूबसूरत है उसके साथ तालमेल बैठाने के लिए हमें आधुनिकता और अपने ग्रामीण जीवन की सरलता को भी अपनाना होगा तभी जीवन सुखद और शांतिपूर्ण होगा और हम सही मायनो में प्रगति कर सकेंगे।

अंश प्रताप सिंह

बी. ए. हिंदी ऑनर्स

जीवन के एक रिश्ते की बुनियाद

जीवन के एक रिश्ते की बुनियाद देखते हैं चलो आज उस दोस्ती की बात करते हैं, बीते लम्हों के कुछ पन्ने पलटते हैं। देखें जरा किस-किस के नाम झलकते हैं। कुछ स्कूल के, कुछ कोचिंग के तो कुछ कॉलेज के चेहरे भी आएंगे, चलो उन सबको लेकर यादों के साथ चलते हैं, क्योंकि खूबसूरत दोस्त ही तो इन यादों को बनाते हैं। यह वही अनजान चेहरे हैं जिन्हें हम अपना बताते हैं। कोई माने या ना माने दोस्ती भी मोहब्बत की तरह कहके नहीं होती। लोग यूं ही थोड़ी ही यारों को अपना संसार बताते हैं, लेकिन आजकल तो दोस्ती का मतलब ही बदल गया है, किसी के साथ सोशल मीडिया पर बात तो किसी के साथ फोटो खिंचवाने, और रील बनाने तक ही सिमट गया है।

दोस्ती के नाम पर गलत पहचान बताई जाती है। इन चेहरों के सामने ही सच्चाई छुपाई जाती है। दोस्ती के नाम पर अक्सर धोखा देते हैं लोग। सच्चे दोस्त होने की एक उम्मीद जगाये रहते हैं कुछ लोग। लेकिन ऐसा नहीं है की सभी ऐसे होते हैं कुछ दोस्त प्यारे और अच्छे होते हैं और वो ही दोस्त जीवन भर हमारे साथ रहते हैं और एक पवित्र रिश्ते की बुनियाद रखते हैं। कुछ ही दोस्त है जो दिल के सच्चे होते हैं।

शाजिया
बी हिंदी ऑनर्स
द्वितीय वर्ष

एक एहसास

तू रोज़ मेरी आंखों से होकर जाती थी,
वही आँखें... जो एक बार दूसरी क्लास में तुझसे मिली थीं।

तेरा हँसना आज भी वैसा ही है—
जैसे स्कूल की छुट्टी के बाद खिली धूप...
पर मैं अब भी वही बादल हूं,
जो खुद भीगकर तुझे मुस्कुराने का मौसम देता रहा।

मैं हर रोज़ तुझमें खो जाता था,
और तू हर रोज़ मुझसे अनजान निकल जाती थी।

बहुत बार चाहा तुझसे कुछ कह दूँ,
मगर लफ़्ज़ गले में ही दम तोड़ देते थे।

तेरी पीली चूड़ियाँ, तेरी धीमी मुस्कान,
वो आज भी मेरे वजूद में गूंजती हैं।

लोग पूछते हैं किसके लिए लिखता हूं मैं,
मैं मुस्कुरा देता हूं...
क्योंकि वो नाम तो अब मेरी सांसों में है—
जिसे ज़माना जान भी न पाए।
मैं दूर हो कर भी... तेरे साथ ही था।

मोहित शुक्ला
हिंदी ऑनर्स

आधुनिक जीवन शैली

आधुनिक जीवन शैली ने मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया है इससे भले ही तकनीकी उन्नति शिक्षा एवं रोजगार के नए अवसर मिले हैं परंतु इसके साथ ही साथ मानव जीवन में विभिन्न समस्याओं और चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। आधुनिक जीवन शैली की विशेषताएं है तकनीकी उन्नति, शिक्षा और रोजगार के नए अवसर, शहरीकरण, वैश्वीकरण। आधुनिक जीवन शैली में विभिन्न प्रकार के संचार माध्यमों जैसे टेलीविजन, रेडियो तथा इंटरनेट के माध्यम से हम सेकेंडों में किसी स्थान पर बैठकर सूचनाओं को प्राप्त कर सकते हैं। शहरीकरण तथा आधुनिक जीवन शैली ने शहरीकरण को अधिक तेज गति प्रदान की है इसके साथ ही इसने शहर में प्रदूषण जैसी अनेक समस्याओं और कारकों को भी जन्म दिया है। वैश्वीकरण आधुनिक जीवन शैली ने संपूर्ण विश्व को एक गांव बना दिया है इससे संपूर्ण विश्व एक जाल में सिमट गया है तथा इसने संपूर्ण विश्व को एक नया व आधुनिक मंच प्रदान किया है। शिक्षा और रोजगार के नए अवसर आधुनिक जीवन शैली के विभिन्न माध्यमों से प्राप्त हुए हैं तथा इसके विभिन्न माध्यमों से ऑनलाइन शिक्षा के नए अवसर भी प्राप्त हुए हैं।

आधुनिक जीवन शैली की चुनौतियां - स्वस्थ मानव मस्तिष्क का अभाव वर्तमान में आधुनिक जीवन शैली के अंतर्गत सोशल मीडिया का उपयोग करने से मानव को एक स्वस्थ जीवन शैली पाना एक चुनौती के समान हो गया है। शारीरिक निष्क्रियता, अधिक समय तक स्क्रीन के सामने बैठने से मोटापा, डायबिटीज, हृदय रोग जैसे रोगों से जूझना पड़ता है।

पर्यावरण संरक्षण का अभाव आधुनिक जीवन शैली में मानव ने प्रतिस्पर्धात्मक जीवन शैली को अपनाया है जिससे औद्योगिक कारखाने के अत्यधिक प्रयोग से विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों का उद्भव हुआ है जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण आदि। अधिक समय तक कंप्यूटर की स्क्रीन के सामने बैठने से नींद की गुणवत्ता में कमी आती है जिसके परिणाम स्वरूप अत्यधिक थकान, चिड़चिड़ापन आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। **स्वास्थ्य पर कुप्रभाव** विभिन्न प्रकार के फास्ट फूड और स्नेक्स का अधिक सेवन करने से आजकल के युवाओं में मोटापा डायबिटीज हार्ट अटैक इत्यादि समस्याओं का कम कम उम्र में ही सामना करना पड़ता है।

आधुनिक जीवन शैली की समस्याओं का समाधान - संतुलित आहार, ताजे फल व सब्जियों का सेवन करके एक संतुलित और स्वस्थ आहार बनाया जा सकता है। स्वस्थ और संतुलित आहार से हमारा स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा जीवन में हम अधिक प्रगति कर सकते हैं साथ ही कई तरह की गंभीर बीमारियों से बच सकते हैं।

वित्तीय बजट - विभिन्न प्रकार के अनावश्यक खर्चों से बचने के लिए तथा अधिक से अधिक बचत और निवेश करने के उद्देश्य से एक वित्तीय बजट बनाया जा सकता है।

आधुनिक जीवन शैली में हमारे रोजमर्रा के खर्चे हमारे जीवन में बढ़ गए हैं जिससे शहरों में रहना बहुत महंगा हो गया है किंतु यदि बजट के अनुसार चला जाए तो हम कम खर्चे में भी एक अच्छा जीवन जी सकते हैं। **स्वस्थ मानव मस्तिष्क** - योग आधुनिक जीवन शैली में हम निष्क्रिय हो गए हैं इसलिए आज के समय में योग और ज्ञान का महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है। योग और ध्यान के माध्यम से हम अपना स्वास्थ्य ठीक कर सकते हैं साथ ही अपने स्वस्थ मस्तिष्क को हम उन्नति के काम में लगा सकते हैं। आजकल की तनाव अवसाद, चिंता जैसी समस्याओं से योग और ध्यान के माध्यम से उन्हें दूर कर सकते हैं। **पर्यावरण संरक्षण** - आधुनिक जीवन शैली को और अधिक संतुलित बनाने के लिए पर्यावरण संरक्षण आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, अक्षय ऊर्जा तथा हरित प्रौद्योगिकी का अत्यधिक उपयोग करके पर्यावरण को संरक्षित किया जा सकता है।

सामाजिक संबंधों में सुधार - वर्तमान में सोशल मीडिया तथा इंटरनेट के अत्यधिक उपयोग करने से मानव में कई प्रकार के तनाव का सामना करना पड़ता है। एक ही घर में रहते हुए मोबाइल पर ज्यादा समय बिताया जाता है जिससे आपसी संबंधों में दूरी आ जाती है परंतु मोबाइल और लैपटॉप के सीमित उपयोग से सामाजिक संबंधों को हम सरस बना सकते हैं तथा इनका सीमित उपयोग करके आने वाली पीढ़ियों को एक सकारात्मक संदेश भी दिया जा सकता है। निष्कर्ष यह है कि आधुनिक जीवन शैली ने मनुष्य के रहन-सहन तथा उनके कार्य करने के तरीके को ही बदल दिया है। इसके जहां विभिन्न लाभ है जैसे तकनीकी उन्नति, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा तथा रोजगार के नए अवसर वहीं विभिन्न चुनौतियों तथा समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है जैसे खराब स्वास्थ्य, सामाजिक संबंधों में दूरी, तनाव, चिंता आदि। लेकिन आधुनिक जीवन शैली को संतुलित बनाने के लिए हमें अपनी जीवनचर्या में थोड़ा सा परिवर्तन करके उसे और अधिक सुंदर और सहज बनाया जा सकता है। आधुनिक जीवन शैली की यह समस्या एक दिन अवश्य दूर होगी और हम पूर्ण स्वस्थ जीवन जी सकेंगे।

पूनम ढिल्लों
बीए प्रोग्राम

युगारंभ

भास्कर जब पूर्व से निकलता है
नूतन दिन निश्चित रहता है
भाव क्लान्ति मिटाना प्रथम ध्येय
जन - जन की तृष्णा हरता है।

किन्तु जब बादल घिरता है
अम्बर का सूरज छिपता है
बहु वारि धरा पर पड़ -पड़ कर
धरती को चोटिल करता है।

जब प्रकृति स्वयं इच्छित होगी
शबनम की बूँद खिली होगी
सिंदूरी सूर्य खग किसलय
से पूर्ण बयार भरी होगी

जब दिन में भी तम आएगा
महा विनाश मचाएगा
वह दिवस भानु का न होकर
अंधकार कहलाएगा।

अधिक धूप भी भारी है
और अधिक छाँव दुखकारी है
यह दिवस रात्रि की कथा नहीं
यह तन सबका अधिकारी है।

यह अंधकार न चलायमान
किरणों को जाना पड़ता है
तब अंधकार, रश्मि से ही
संसृति सिखलाई पड़ता है।

यह तम जब अधिक दिखाएगा
सबको निद्रा में सुलाएगा
सब तामधीन जब होंगे तब
युगारंभ हो जाएगा।

मेरी परछाइयाँ हैं अकेली

इस कड़ी धूप में
सिर्फ सूरज सिखाई दे रहा है
तपती पथरीली राहों पर
बस ये पैर,
चले जा रहे हैं ...
भटकती लाश जैसे ;
आसमान से बादल भी भाग गए हैं
मै और सूरज दोनों जल रहे हैं
लेकिन मेरे पीछे छाँव को संजोए
मेरी परछाइयाँ हैं अकेली।

विशाल शर्मा
बी ए प्रोग्राम
द्वितीय वर्ष

डरी हुई आज़ादी: एक सवाल समाज से

अब समझ नहीं आता
ये दरिंदगी कब तक चल पाएगी
घर से निकलने से पहले डर लगता है
क्या बेटी सही सलामत घर वापस आएगी?
और कब, कैसे, कहाँ तक बचती फिरे
क्या खुलकर आज़ादी से सांस ले पाएगी?

अच्छा होता अगर ये समाज समझ पाता तो
कैसे रहें घर में जब घर भी डराता हो
और ये कैंडल मार्च से क्या इंसाफ़ मिल जाएगा?
अब सुरक्षित हैं लड़कियाँ – क्या ये भरोसा दिलवाएगा?

जिसने सहा सब, अब मुजरिम वही है
कैसे कहे वो कि ग़लती उसकी नहीं है?
अब भी सवाल पहनावे पर आएगा
"वहाँ थी ही क्यों?" – ये हर कोई पूछने आएगा

फिर मिलकर उसे ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा
और दरिंदे को भी तो उस बीच बचाया जाएगा
फिर कमियाँ गिनवाने की शुरुआत होगी
"अरे लड़की है, रात को कहीं जाना ही नहीं था"
"ग़लती तो इसकी ही है, इसने सही पहनावा पहना ही नहीं था"
"क्यों जाती थी काम पे? घर पे रहना क्या सुरक्षित नहीं था?"
"अरे, इसे लड़की बनकर पैदा ही नहीं होना था!"

एक गुनहगार को बचाने की ख़ातिर
एक बेगुनाह पे कितने इल्ज़ाम लगाओगे?
वो जो दुनिया में भी नहीं रही, उसके बारे में बोल ये सब
क्या खुद से नज़रें मिला पाओगे?
और क्या अपनी बहनों-बेटियों को ये कह पाओगे?
क्या कभी कोई बाप, बेटी की फिक्र किये बिना चैन से सो पाएगा?
या हर बार की तरह, बैठ उसकी लाश के पास रोता नज़र आएगा?

बस एक सवाल का जवाब ढूँढना है –
इसी तरह ये सब कब तक चलता जाएगा?

रेनू
बी.ए. हिंदी (ऑनर्स)
(द्वितीय वर्ष)

Shyam Lal College (Evening)

SHINING

Annual Day

Celebration

SHYAM LAL COLLEGE

2025

College Society Activities

NSS

The **National Service Scheme (NSS)** Unit of Shyam Lal College (Evening) conducted a series of meaningful activities during the Academic Session 2024–25. The session began with an Orientation and Oath Taking Ceremony held in collaboration with Salaam Baalak Trust, Delhi, where volunteers were introduced to the values and responsibilities of NSS. A five-year Memorandum of Understanding was also formalized with the Trust, strengthening future collaborations. In December, an awareness event highlighted the role of NSS in shaping personality and leadership qualities among students. On Republic Day, a Swachhta Abhiyan was organised to encourage cleanliness, sanitation, and environmental care. The Internship Programme with Salaam Baalak Trust provided hands-on experience in community service. In March 2025, the International Day of Happiness brought vibrant activities promoting joy and positivity, followed by a Water Awareness Drive on World Water Day. The unit also supported the Viksit Bharat Youth Parliament and concluded with a Three-Day Self-Defence Training Camp for girls.

National Cadets Corps (NCC)

The NCC unit of Shyam Lal College is associated with 5DBN, Kashmere Gate. The college NCC unit with a strength of more than 160 cadets, participated in the following activities:

In this session, 56 cadets qualified C certificate examination, and more than 45 of them got A grade and 49 cadets qualified B certificate examination. 09 cadets participated in All India Trekking Camp. 101 cadets participated in Annual Training Camp. 08 cadets participated in Prime Ministers Rally. 07 cadets participated in Ek Bharat Shreshth Bharat Camp. 05 cadets participated in Special National Integration Camp. 05 cadets participated in the Chief Ministers Rally. 03 cadets completed the All India Thal Sainik Camp-2024. 13 cadets participated in the Army Attachment Camp. Under Officer Sanyam Panchal, CSM Ayush Pandey and CQMS Harsh Kanwal completed the Republic Day Camp-2025, and Harsh marched on the Kartavya Path contingent, a cadet from our college doing it after 10 years. Under Officers Madhur and Tarun, along with 19 other cadets completed the Independence Day Camp. CDT Priyank completed the Advance Leadership Camp. Senior Under Officer Akshat Sharma completed the YEP cum Desert Safari Camp-2024. To conclude this successful session, our annual fest- Rakshak 2025 was held, in which more than 1000 cadets came and participated in different activities.

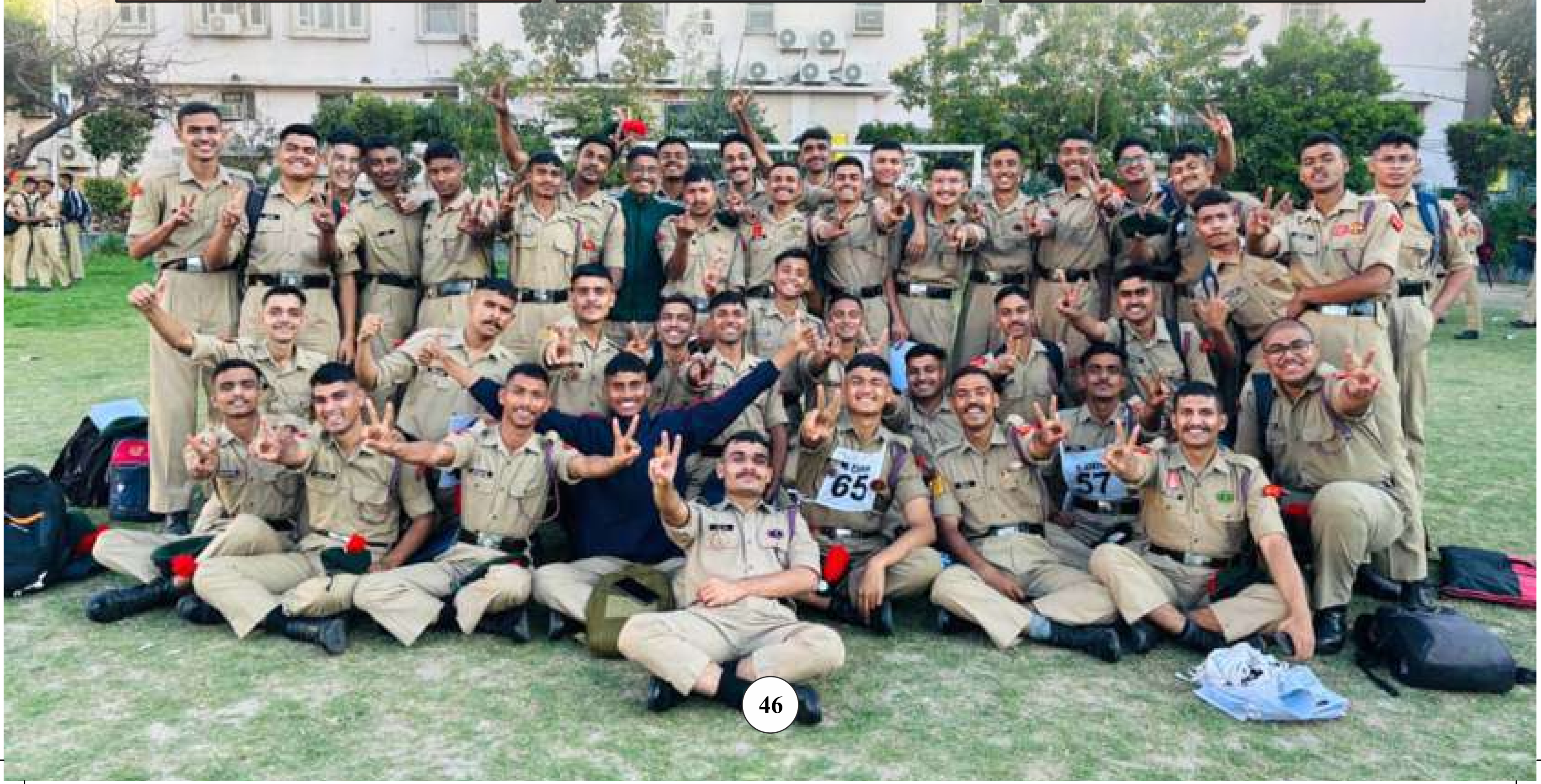

Ambedkar Study Circle

Dr. Bhim Rao Ambedkar, the chief architect of the Indian Constitution, was a visionary social reformer who dedicated his life to fighting caste discrimination and advocating equality, justice, and human rights. His intellectual leadership and commitment to democratic values laid the foundation for modern India. Shyam Lal College (Evening) also has a society named the Ambedkar Study Circle, which works to promote his teachings and ideals.

The inauguration programme of the Ambedkar Study Circle was held on 26th November 2024, at Shyam Lal College (Evening), University of Delhi, to commemorate Constitution Day under the convenorship of Dr. Manoj Kumar. The chief guest, Prof. Durgesh Nandini, discussed Ambedkar's contributions to the Indian Constitution, emphasising his role in promoting social justice and equality. Building on the momentum of the inauguration ceremony, a group comprising the Principal, eight faculty members, and forty-one students visited the Ambedkar Memorial in Civil Lines, Delhi, in February 2025.

EQUAL OPPORTUNITY CELL

The Equal Opportunity Cell organized two key events during the Academic Year 2024–25. An Orientation Program was held on 12th February 2025, featuring a lamp-lighting ceremony, an inaugural address by Principal Prof. Nachiketa Singh, and an inspiring session by guest speaker Mr. Hariom Poswal. A visit to the Khelo India Para Games was conducted on 26th March 2025, where 15 students, along with faculty members, observed the inclusive environment created for athletes with disabilities. The experience highlighted determination, talent, and resilience, further motivating the Cell to strengthen its commitment to promoting inclusivity within the college.

Garden Committee

The Garden Committee has achieved remarkable milestones. A visit to Amrit Udhyan allowed students to explore a diverse variety of flowering plants. New varieties have been added to the Herbal Garden near the water tank. The committee also coordinated with the Plant 4 Mother Campaign under the guidance of Dr. Manoj Kumar, leading to the plantation of a large variety of flowering trees in and around the college vicinity. The Garden Committee participated in the 67th University of Delhi Annual Flower Show held in February 2025, competing in various categories such as flowers, foliage, herbs, and fruits, securing seven prizes. Mali Sh. Arun Kumar received the Best Mali Award from the college.

GANDHI STUDY CIRCLE

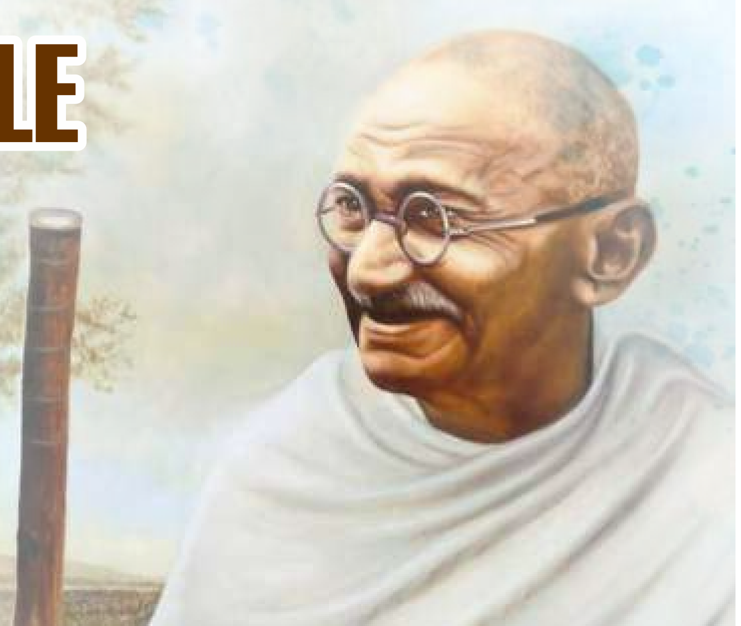

Gandhi Study Circle was significantly active throughout the session and organized a number of insightful and purposeful events to inculcate Gandhian teachings and practices among students. Gandhi Jayanti Celebration was organized and featured various programs, including a dramatic presentation on Relevance of Gandhi Today, Bhajan Sandhya, and poetry recitation. A visit to a unique exhibition was organized in October 2024, showcasing The Reception of Mahatma Gandhi's Life in Hungary Through Culture, Political Science, and Philosophy. The exhibition was followed by lectures by distinguished speakers: Prof. (Dr.) Nachiketa Singh, Principal, Shyam Lal College (Evening), and Dr. Dezso Szenkovics, Dean, Sapientia Hungarian University of Transylvania, Faculty of Sciences and Arts. The Monthly Lecture Series on A 21st Century Interpretation of Gandhis Swaraj was conducted in November 2024 at the National Gandhi Museum, Rajghat, New Delhi.

PICHOLICS

The Photography and Filmmaking Society, PICOHOLICS, conducted an orientation programme and organized the Photo Expo (Inter-College Photography Exhibition cum Competition) in October 2024. Furthermore In March 2025, PICOHOLICS hosted the PICSO 2025 event, featuring two major inter-college competitions: On-the-Spot Photography Competition and On-the-Spot Videography Competition. These events encouraged students participation in photography and videography, fostering creativity and inter-college collaboration. The successful execution of these competitions demonstrated the society's commitment to nurturing talent and promoting photographic and film-making skills among students, while providing valuable exposure and experience through competitive and collaborative activities.

DEBATING SOCIETY: DEBSOC

The Debating Society has actively served as a platform for students to voice their opinions, enhance reasoning skills, and engage in thoughtful discussions. The session commenced with the invitation of student volunteers through a Google Form, followed by interviews to select the society's office bearers, ensuring equal opportunity for all. In collaboration with the Vigilance Awareness Campaign Committee 2024, the society conducted a speech competition in November 2024 on the theme Building a Culture of Integrity: The Path to Nation's Prosperity. An intra-college debate on Cities are Responsible for Climate Crisis was held in February 2025. The event witnessed enthusiastic participation and insightful suggestions from students.

Art Drama and Culture Committee: Abhivyanjana

Abhivyanjana Art, Drama and Culture Society, of Shyam Lal College Evening, organised diverse cultural programmes to provide students a vibrant platform for creative expression. In October 2024, the society hosted Garba Raas 2025, one of its flagship events, featuring an inter-college Dandiya competition followed by a lively Dandiya Night. The event witnessed enthusiastic participation and showcased exceptional talent from various institutions. Throughout the year, Abhivyanjana also represented the college in multiple inter-college cultural events, further strengthening its commitment to nurturing artistic skills and promoting cultural engagement among students.

VIKSIT BHARAT @ 2047

The Viksit Bharat@2047 Committee continues to promote national development goals through impactful academic initiatives. A major highlight of the academic year was the Inter-College Speech Competition on the theme Kaushal Bharat, Kushal Bharat: Viksit Bharat@2047, organized in February 2025.

SKILL DEVELOPMENT CELL

The Skill Development Cell at Shyam Lal College Evening, University of Delhi organised a series of events and signed MoUs to collaborate with different esteemed institutions aimed at enhancing the holistic skill set among students. Skill Development Cell in collaboration with T.I.M.E. Institute organised an exclusive seminar on Career Opportunities After Graduation. Further, SDC inked MoU with BSE Institute Limited, an Institute run by Bombay Stock Exchange for a series of selected short-term courses.

PLACEMENT CELL

The Placement Cell actively conducted various initiatives in the Academic Year 2024–25. Recruitment for the Placement Cell Team took place in October 2024, followed by the launch of internship opportunities in January 2025 with leading organizations. CV Competitions for second- and third-year students and CV Assistance Drives helped over 150 students enhance to their resumes. Job opportunities were facilitated through Planet Spark, Intellion, Jivo Health Care, and Gelgenheit. A two-day workshop on CV and Interview Preparation by industry experts was held in February 2025. The flagship event, PRARAMBH '25, hosted 32 companies, resulting in over 35 student's selections.

WOMENS DEVELOPMENT CELL

Women's Development Cell (WDC) was constituted in February, 2025 by Principal, Professor (Dr.) Nachiketa Singh, with Dr. Surbhi Badhwar as its convenor. WDC organised its Official Inauguration Programme on 27th March, 2025. The occasion was graced by the presence of Principal, faculty members and enthusiastic students. Principal, Professor (Dr.) Nachiketa Singh underlined the significance of WDC and also spoke about how it could be innovative in achieving its objectives. Convenor of WDC, Dr. Surbhi highlighted the legal background of UGC Regulations & guiding principles & mission of WDC.

SPORTS ACHIEVEMENT & TALK

The college encourages active student participation in sports such as hockey, cricket, kabaddi, and basketball, with students regularly earning awards in various competitions. These accomplishments reflect the institution's commitment to holistic growth through academic, physical, and ethical development. The institution continues to strengthen its standard as it strives toward becoming one of the leading educational establishments aligned with the vision of Viksit Bharat. A special talk was delivered by Padma awardee Dr. Ravi Chaturvedi on 30 November 2024, focusing on the intersection of sports and the environment. His session offered valuable insights into how sports activities can foster environmental awareness and support sustainable practices.

Independence Day

CELEBRATION

The session, 2024-25 started with a cultural programme to celebrate the 78th Independence Day at Shyam Lal College Evening. The chief guest of the programme was The Dean of Colleges, Professor Balram Pani, who was given a guard of honour under the leadership of Captain Anil Kumar. The Principal of the college, Professor (Dr.) Nachiketa Singh, conveyed his warmest wishes for a peaceful and prosperous Independence Day. The flag hoisting, plantation drive and cultural programme were also held under the guidance of the Principal and the programme coordinator, Prof Sumitra Mehrol.

Departmental Society Initiatives

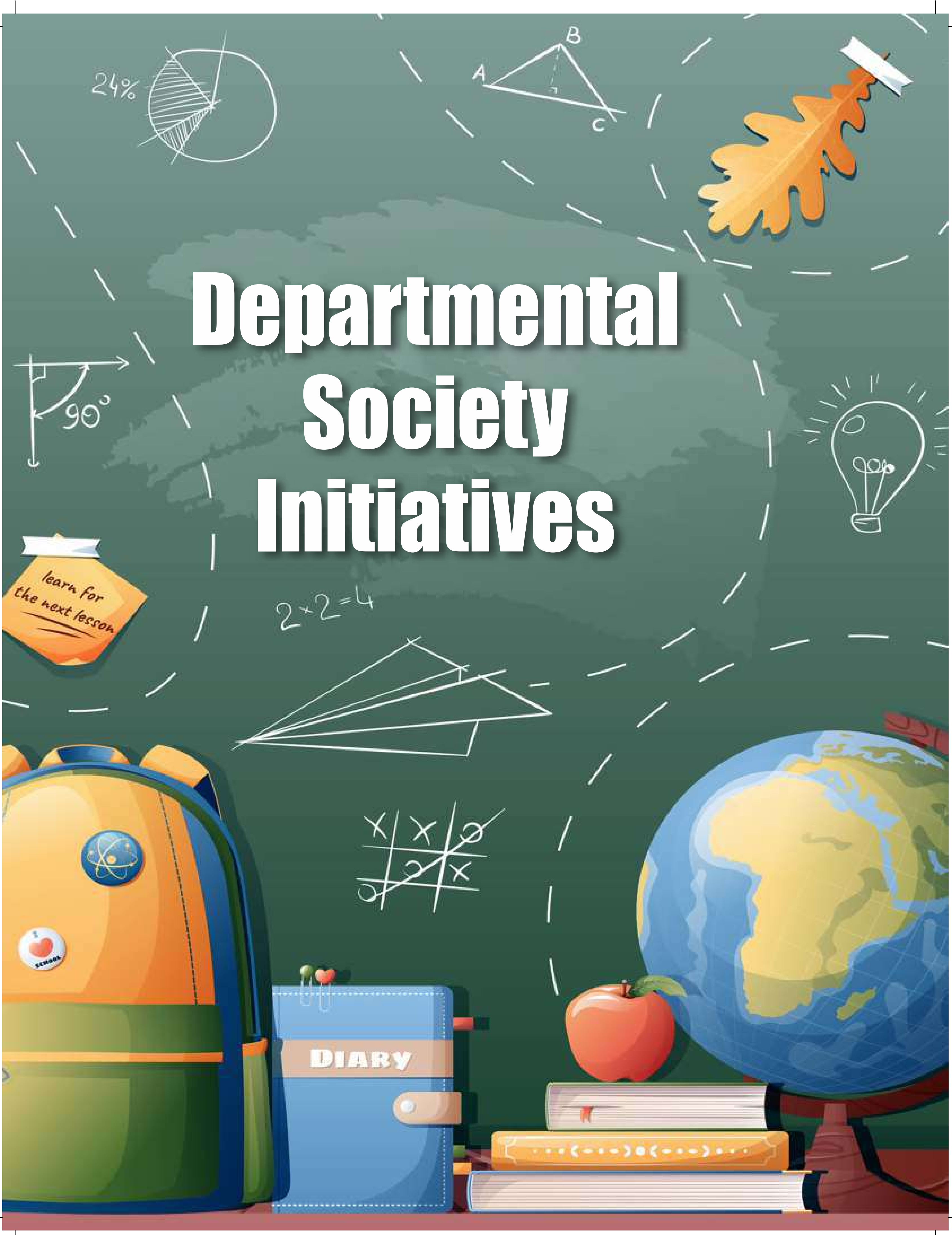

DEPARTMENT OF COMMERCE 'AMOUR'

The academic session 2024–25 began with the Orientation Programme for the new students of B. Com (H) and B. Com (P). The Department conducted a two-day workshop on Business Analytics on January 16-17, 2025. AMOUR, the department society, organized Orientation in October 2024, followed by The Stock Market Seminar and How to Face an Interview Seminar in February 2025. The Speakers Forum, organised in February-March 2025, featured sessions on Leadership & Women Empowerment, Career Planning, and Startups & Content Creation. The forum also included competitive events. The year concluded with an Industrial Visit to Yakult in March 2025.

DEPARTMENT OF COMPUTER SCIENCE 'INSPIRITI'

Under the banner of its departmental society, InspirITi, an inter-college quiz competition titled Trivia Frenzy 2025 was held in February 2025. Additionally, InspirITi hosted the department's flagship inter-college fest, 6th AGON, 2025 in February 2025. AGON'25 featured five competitive events—Pixel Perfect, Design Verse, Grid Master, and Doodle Contest. The department organized a Guest Lecture titled Redrawing Social Media Boundaries Using AI in March 2025.

ECOSQUARE SOCIETY

ELLA

The Department of English organized two vibrant literary events in 2024-25. In February, an intra-college debate competition was held on the theme "The Rise of AI-Generated Content: A Threat to Authentic Literary Expression" Students presented insightful arguments on the impact of technology on creativity. In March, the department celebrated World Poetry Day with an intra-college poetry recitation competition based on the theme "Hope: The Beacon Within." Participants expressed resilience and optimism through powerful poetic performances. Both events offered students a meaningful platform to showcase their talent and deepen their engagement with literature.

SRIJAN

On the occasion of Teachers Day the students of Hindi Department felicitated teachers. The Department organized a lecture on the occasion of Hindi Divas. The topic of the lecture was हिन्दीः संभावनाओं के विविध आयाम The Department organized a programme on Hindi Literature - Quiz Competition in September 2025. The Departmental Society, Srijan: Literary Forum, Organized an inter-college Self Composed Poetry Recitation and Poster making competition event in March 2025.

SAKSHYA

The Department of History celebrated the 200th episode of its Graduate Scholars Talk Series (GSTS) on April 22, 2025, marking a significant academic milestone. The event, themed "The Art of Articulation 2.0," brought together eminent speakers who delivered insightful talks on communication, expression, and scholarly articulation. The celebration also featured engaging cultural performances that added vibrancy to the occasion. Students and faculty participated in meaningful intellectual discussions, highlighting the department's commitment to academic excellence and interactive learning. The milestone episode of GSTS reaffirmed the department's dedication to fostering knowledge-sharing, critical thinking, and an enriching academic environment for the entire college community.

DEPARTMENT OF MATHEMATICS 'EUREKA'

The Mathematics Society EUREKA organized its Annual Fest MATHEMATICA in March 2025 Two events, Chess competition - Checkmate Champions and Quiz competition - Brain Bash were organized, on this occasion.

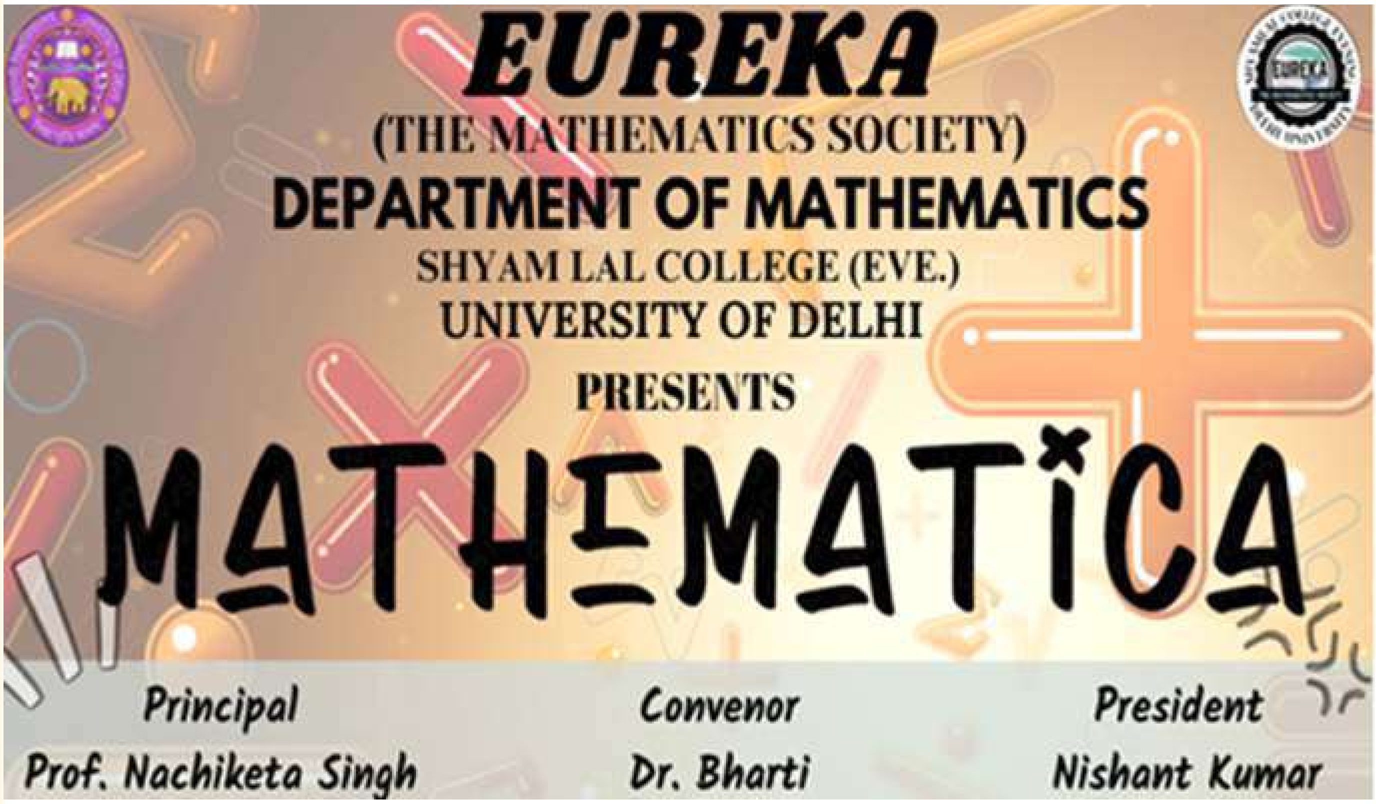

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE 'PRERNA'

The Fresher's Welcome was held in October 2024 which warmly introduced new students to the department. The department organised a seminar guiding students on civil services preparation in October 2024. The department organized a visit to Journey Through Elections: Centre-Cum-Museum and Gandhi Gallery at the Chief Electoral Officers office in Delhi, located at Kashmere Gate in Old St. Stephens Campus in March 2025.

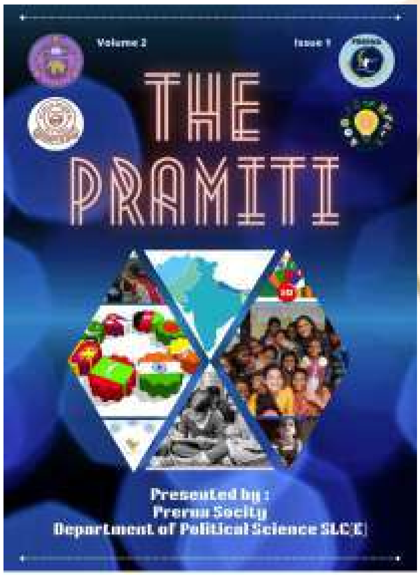

Enactus

Enactus SLCE led multiple community and sustainability initiatives from August 2024 to March 2025. The year began with Enactus Period and participation in AARAMBH, followed by an Independence Day event with Sewa Bharati and a campus Newspaper Drive. Key activities included social awareness reels, educational seminars, and the flagship event, Enactus Xposure. The Murli Instagram page launched in November to promote sustainable products, alongside drives and partnerships like Little Seeds x Project Qissah. Later months saw leadership sessions, awareness stalls, B-Plan competitions, and Project Vismaya's R&D, fostering entrepreneurship and impactful social engagement across diverse platforms.

STUDENT UNION

From Left to Right Faiza khan (Joint Secretary)
Udal Singh Gurjar (President), Arpit Dhama (CC 2), Manish kumar (Secretary)
Anshul Yadav (Vice President), Aakash Yadav (CC 1), Daksh Gautam (Treasurer)

Academic, Cultural and Awareness Program

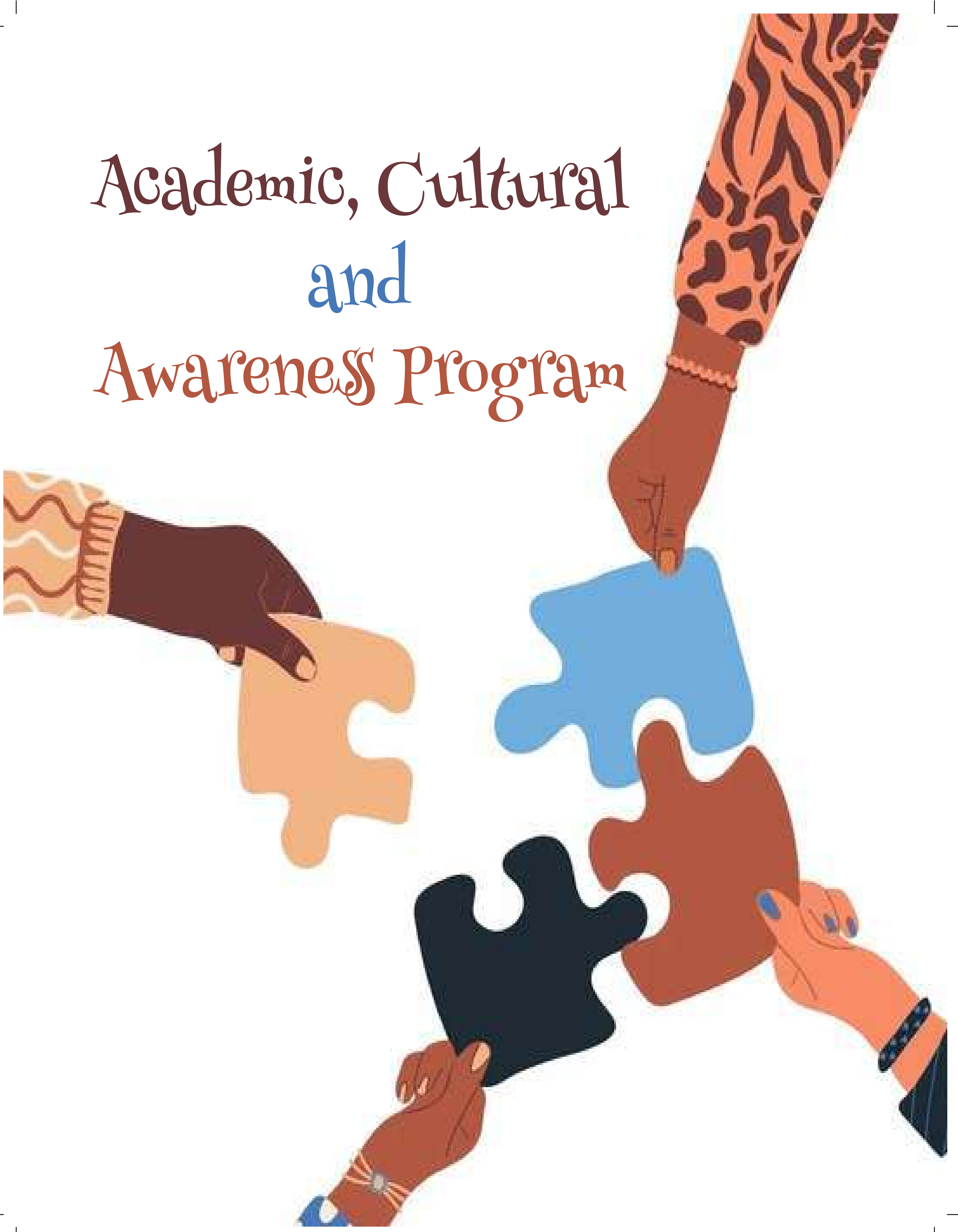

Cleanliness Drive on the Republic Day

Shyam Lal College, Evening organized a Cleanliness Drive on 26th January 2025 to mark the celebration of Republic Day. The initiative was conducted in collaboration with the Student Union, NSS, NCC, and the Ambedkar Study Circle, reflecting the college's commitment to civic responsibility and community participation. The drive began at 10:00 a.m. in the Flag Ground Area, where volunteers, students, and faculty members gathered to promote the message of maintaining a clean and healthy campus. Participants actively engaged in cleaning activities, spreading awareness about hygiene, and encouraging responsible behavior. The program successfully fostered unity, discipline, and environmental consciousness among the college community.

PLANT 4 MOTHER CAMPAIGN:
एक पेड़ माँ के नाम

The Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi, launched the global campaign EK PED MAA KE NAAM on World Environment Day, June 5, 2024. This initiative, spearheaded by the Ministry of Environment, Forest, and Climate Change, aims to plant 80 crore saplings across the country by September 2024 and 140 crore saplings by March 2025.

In response to this initiative, Shyam Lal College, Evening, University of Delhi, launched a comprehensive ten-day campaign from August 20, 2024, to August 31, 2024. The campaign, led by Principal Prof. Nachiketa Singh, Dr. Manoj Kumar (Convenor), and Ms. Ila Bhushan Jain (Co-Convenor), encompassed a range of activities, including a plantation drive involving faculty and students to promote environmental sustainability. Renowned experts delivered lectures on environmental conservation and sustainability. Students showcased their creativity through poster making, slogan writing, and poetry. The college also collaborated with the NGO Salam Balak Trust to extend the campaigns impact.

Rashtra Pratham

Shyam Lal College (Evening) organized the Nation First campaign to honour the Indian Army's exemplary achievement in Operation Sindhur. The event served as a solemn tribute to the courage and sacrifice of the soldiers who bravely defended the nation against terrorist threats. The college community gathered to express collective gratitude and national pride, reaffirming its commitment to unity and security. Students of B.A. (Programme) First Year presented a meaningful theatrical performance depicting the significance and success of the operation sindoor. The programme highlighted the values of patriotism, respect for the armed forces, and the shared responsibility of safeguarding the nation's dignity.

Sanskrit Sambhashan Shivir

From April 23 to May 3, a 20-hour workshop titled "Learn to Speak Sanskrit in 20 Hours" was organized at Shyam Lal College, Evening, Delhi. Sanskrit Bharati Delhi hosted this immersive camp to promote spoken Sanskrit among students and the wider community. Distinguished guests highlighted the importance of Sanskrit as a part of Indian identity and culture, emphasizing its enduring relevance and connection to heritage. The camp included interactive sessions, discussions, and activities designed to make Sanskrit accessible and engaging for all participants. The event successfully fostered enthusiasm for Sanskrit learning and showcased its role in contemporary Indian life.

संस्कृत हमारी पहचान है - प्रो. नचिकेता सिंह

श्याम लाल कॉलेज (सांध्य) में संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन

संस्कृत भारती, दिल्ली और श्याम लाल कॉलेज (सांध्य) में दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उद्घाटन समारोह आयोजित हुआ। इस उद्घाटन समारोह में स्वागत वक्तव्य देते हुए कॉलेज के प्राचार्य प्रो. नचिकेता सिंह ने कहा कि संस्कृत हमें संस्कारित करती है। यह हमारी पहचान है।भारतीय संस्कृति और सभ्यता इसी की आधारशिला पर टिकि है। उन्होंने ऐसे आयोजनों पर गर्व करते हुए कहा कि इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति देखकर बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि डॉ. धनञ्जय कुमार आचार्य ने संस्कृत के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उसे भारतीय ज्ञान परम्परा से जोड़कर देखा।उन्होंने कई सूत्रों के माध्यम से संस्कृत भाषा से जुड़ी कई रोचक जानकारियों को साझा किया। इस शिविर के अतिथि अध्यापकों क्रमशः डॉ.मदन मोहन तिवारी और प्रज्ञा त्रिपाठी ने सभी को संस्कृत भाषा को आत्मसात करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि संस्कृत से हमें व्याकरणिक शुद्धता की पहचान होती है। इस समारोह में शामिल सभी आगंतुकों को धन्यवाद देते हुए हिंदी विभाग की प्रभारी प्रो.सुमित्रा ने कहा कि संस्कृत आज भी प्रासंगिक है। हमारे वेद-शास्त्रों में अखिल विश्व का विज्ञान समाहित है। इसे समझने की जरूरत है। इसका संचालन दस दिवसीय शिविर के संयोजक डॉ. नीरज कुमार मिश्र ने किया।इस समारोह में कॉलेज के कई विभागों के अध्यापक,नॉन-टीचिंग स्टाफ,पुस्तकालय स्टाफ आदि के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

ति के सदस्यों

एक नजर

जनसत्ता 3/1

मनोरंजन कक्ष में वातानुकूलित (एसी) की सुविधा भी हो।

'संस्कृत हमारी पहचान है'

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 24 अप्रैल।

संस्कृत भारती, दिल्ली और श्याम लाल कालेज (सांध्य) में दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उद्घाटन हुआ। स्वागत वक्तव्य में कालेज के प्राचार्य नचिकेता सिंह ने कहा कि संस्कृत हमें संस्कारित करती है। यह हमारी पहचान है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता इसी की आधारशिला पर टिके हैं।

शिविर में विशिष्ट अतिथि धनंजय कुमार आचार्य ने संस्कृत के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उसे भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़कर देखा। उन्होंने कई सूत्रों के माध्यम से संस्कृत भाषा से जुड़ी कई रोचक जानकारियों को साझा किया।

VIGILANCE AWARENESS CAMPAIGN

In alignment with the Central Vigilance Commissions (CVC) three-month Preventive Vigilance Campaign (August 16 – November 15, 2024), Shyam Lal College, Evening undertook a series of impactful initiatives to promote ethics, transparency, and accountability. The campaign focused on five core areas: capacity building, systemic improvements, updating guidelines, addressing pending complaints, and enhancing digital presence.

Under the convenorship of Dr. Bharti, the Central Vigilance Committee of the college also observed Vigilance Awareness Week from October 28 to November 3, 2024, under the theme Culture of Integrity for Nations Prosperity. Activities included a Citizen Oath-taking ceremony, Poster-making, and Slogan-writing competitions. A writing competition on topics like Culture of Integrity for Nations Prosperity and Anti-Corruption held in October 2024 saw enthusiastic student participation.

A workshop titled Revisiting Ethics and Governance: Code of Conduct, Rules, and Procedures was conducted by Dr. Bhuwan Kumar Jha, Associate Professor, Department of History, University of Delhi in November 2024. The session, attended by teaching and non-teaching staff, concluded with an integrity pledge for organizations.

Continuing the momentum, the committee organised a Speech Competition on Building a Culture of Integrity: The Path to Nations Prosperity in November 2024, in collaboration with the Debating Society. Campaign concluded with a Valedictory Ceremony where participants were lauded for their dedication. Certificates of appreciation were awarded to volunteers and winners. The event successfully reinforced a collective commitment to integrity and vigilance in public life.

CAMPUS AMBASSADOR,
ECI (ELECTION COMMISSION OF INDIA)

The Election Commission of India conducts SVEEP (Systematic Voters Education and Electoral Participation) activities to enrol left-out voters, particularly youth, through initiatives like National Voters Day and Special Drives. To support this, ECI introduced the concept of appointing Campus Ambassadors in universities and colleges to spread awareness about the electoral process. In this regard, two students were selected as Campus Ambassadors from the college to promote electoral literacy among their peers.

An Inter-College Open Mic and Speech Competition titled Mera Vote, Meri Zimmedari was held on 29th January 2025 at the College Seminar Hall to raise awareness about voting rights and duties. The event was attended by Dr. Shubhnoor (SDM, District Election Office, Shahdara, Delhi), Principal Prof. Nachiketa Singh, Ms. Manju Kohli (Nodal Officer), and Dr. Manoj Kumar (Convenor), who shared their insights on the importance of electoral participation.

Yoga Day

Shyam Lal College Evening celebrated International Yoga Day on 21st June 2025 with great enthusiasm and collective spirit. All faculty members participated wholeheartedly, gathering in the college grounds early at 6 p.m. to mark the occasion. The session began with simple warm-up exercises followed by a series of yoga postures aimed at improving flexibility, balance, and mindfulness. The atmosphere was calm and focused as everyone engaged in the practice together. The event highlighted the importance of holistic well-being and encouraged faculty to integrate healthy habits into their daily routines. It concluded with a brief meditation, promoting inner peace and relaxation.

Student of the Year

YOGESH - B.A. (Prog.) III Year

Outstanding Performers of the Year

ANUSH, SHRESH TIWARI, ARYAN KATHURIYA, PRIYANK SINHA

BACK BONE OF COLLEGE
CONTRIBUTiON FOR COLLEGE

Shyam Lal College (Evening) in News

राष्ट्रीय संगोष्ठी में श्यामलाल कॉलेज (सांध्य) के विद्यार्थियों ने की शिरकत

कैपिटल ज़ोन

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से होगा सच्चे राष्ट्र का निर्माण : प्रो. नचिकेता सिंह

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से होगा सच्चे राष्ट्र का निर्माण - प्रो. नचिकेता सिंह

श्यामलाल कॉलेज (सांध्य) में सतर्कता जागरूकता अभियान

हिंदी नई चाल में चली भी और ढली भी : अनिल राय

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 14 सितंबर।

दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य) में हिंदी विभाग के उपलक्ष्य पर हिंदी विभाग ने 'हिंदी : संभावनाओं के विविध आयाम' पर व्याख्यान का आयोजन किया। महाविद्यालय के प्राचार्य नचिकेता सिंह ने स्वागत-वक्तव्य में कहा कि आज हिंदी के अनेक आयाम हमारे सामने नजर आते हैं, जिनके माध्यम से हम अपने कौशल का विकास कर सकते हैं। किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा से होती है। भाषा के विकास से राष्ट्र का विकास जुड़ा हुआ है। मुख्य वक्ता अनिल राय ने कहा कि आज के इस दौर में हिंदी नई चाल में चली भी और ढली भी है।

संविधान के क्रियान्वयन पर ज्यादा जोर होना चाहिए : प्रो. दुर्गेश नंदिनी

गांधी अध्ययन केंद्र द्वारा ने गांधी को याद किया

श्यामलाल कालेज, सांध्य के प्राचार्य प्रो.नचिकेता सिंह ने गांधी को याद करते हुए सभी को गांधी के विचारों को आत्मसात करने का संदेश दिया। इतिहास विभाग के डॉ.प्रमोद कुमार ने गांधी के ऐतिहासिक पहलुओं को रखते हुए उनके विचारों को अपने - अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए सबको प्रेरित किया। हिंदी विभाग के डॉ.अनिल राय ने गांधी की पुस्तक 'हिन्द स्वराज' के महत्व को रेखांकित करते हुए, उनके साहित्यिक और सामाजिक प्रभाव को तुलसी से जोड़कर देखा। राजनीति विज्ञान के प्रो.कुमार प्रशांत ने गांधी के राजनीतिक पक्षों को बताते हुए, उनके आंदोलनों के सामाजिक और राजनीतिक प्रभावों को रेखांकित किया। गांधी अध्ययन केंद्र के प्रभारी डॉ अमित सिंह ने 'सत्य के प्रयोग' पुस्तक पर केंद्रित गांधी के यात्रा - संस्मरण के माध्यम से गांधी के शिक्षा मॉडल को बताते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में लागू भाषाओं के प्रावधान पर अपने विचार रखने के साथ धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भाषण, गीत-गायन, कविता पाठ के माध्यम से सम्मति को जीवंत कर दिया। इसमें गांधी अध्ययन केंद्र समिति के सदस्य एवं अन्य शिक्षक, छात्र आदि बड़ी संख्या में शामिल रहे।

स्वतंत्रता दिवस का भाव हमेशा रहना चाहिए : पाणि

78 वें स्वतंत्रता दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ

श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य) में एक पेड़ मां के नाम अभियान का आयोजन

श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य) में ओरिएंटेशन कार्यक्रम

आज हिंदी नए चाल में चली भी और ढली भी है - प्रो.अनिल राय

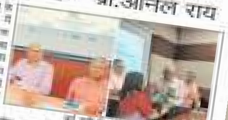

कविता व्यक्ति के आंतरिक भावों को व्यक्त करती है - प्रो.नचिकेता सिंह

जनसत्ता 8 मार्च, 2025

आपरेशन सिंदूर के सम्मान में 'राष्ट्र प्रथम' अभियान

श्यामलाल कॉलेज (सांध्य) ने गांधी को किया याद

साहित्य और कला समाज की गहरी पड़ताल करते हैं - प्रो.नचिकेता सिंह

श्यामलाल महाविद्यालय (सांध्य) के हिंदी विभाग में प्रतियोगिता आयोजित

राष्ट्र प्रथम अभियान और सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलि व सम्मान : नचिकेता

स्वतंत्रता दिवस का भाव एक दिन के लिए ही केंद्रीकृत नहीं होना चाहिए - प्रो.बलराम पाणि

खबर कोना

महाविद्यालय की गतिविधियों से परिचित हुए नए विद्यार्थी

Remembering the Founder

Padmashri Shyam Lal Gupta

(1912 - 1989)

Founder, Shyam Lal College

Founder Chairman, Governing Body & Shyam Lal Charitable Trust

Artistic Voice OF SLCE